शिमला से प्रकाशित

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

प्रकाशन का 49 वां वर्ष

ई – पेपर

www.facebook.com/shailsamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 49 अंक – 15 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93 /एस एम एल Valid upto 31-12-2026 सोमवार 1 – 8 अप्रैल 2024 मूल्य पांच रूपये

मुख्यमंत्री और बागी आये आमने सामने

- नादौन में विलेज कामन लैण्ड की खरीद बेच पर बड़े धमाके की संभावना
- क्या नादौन में लैण्ड सीलिंग एक्ट की अनदेखी हो रही है?

शिमला/शैल। कांग्रेस के बागीयों द्वारा राज्यसभा में क्रॉस वोटिंग करके पार्टी के उम्मीदवार को हराने से प्रदेश की राजनीति एक बहुत ही नाजुक मोड पर पहुंच गई है। क्योंकि इन बागीयों को कांग्रेस ने विधानसभा से निष्कासित करवाकर इनके किसी भी दूसरे दल में जाने का रास्ता आसान कर दिया। परिणामस्वरुप यह लोग निष्कासन के बाद भाजपा में शामिल भी हो गए और उपचुनाव के लिए भाजपा के उम्मीदवार भी नामित हो गए। उनके उम्मीदवार नामित होने से भाजपा में जो रोष के स्वर उभरे थे वह भी शांत होते जा रहे हैं। अब केवल भीतरघात की अटकलें ही शेष रह गई है और ऐसी अटकलों से कांग्रेस भी अछूती नहीं है। क्योंकि कांग्रेस भी भाजपा में सेंधमारी के प्रयासों में लग गई है और यह प्रयास भी सार्वजनिक हो गये जबकि इनका कोई परिणाम सामने नहीं आ पाया है। कांग्रेस अभी तक अपने उम्मीदवारों का चयन नहीं कर पायी है ऐसे में उम्मीदवारों के घोषित हुए बिना ही मुख्यमंत्री को चुनाव प्रचार की शुरुआत करनी पड़ी है। यह शुरुआत कुटलैहड़ विधानसभा क्षेत्र से की गई क्योंकि यहां भी उपचुनाव होना है। यहां से देवेन्द्र भूटो बागी होकर भाजपा के उम्मीदवार नामित हो चुके हैं ।

मुख्यमंत्री ने यहां से चुनावी शंखनाद फुंकते हुए देवेंद्र भूटो को कुटो का आहवान करके साथ ही बागीयों के पन्द्रह – पन्द्रह करोड़ में का आरोप लगा दिया। 'भूटो को कुटो' का असर मतदाताओं पर कोई अच्छा नहीं पड़ा है क्योंकि यह परिवार पिछले बीस वर्षो से क्षेत्र के सार्वजनिक जीवन में है। परिवार से तीन लोग पंचायत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। देवेंद्र भूटो प्रदेश के सबसे कम आयु के बी.डी.सी. अध्यक्ष रह चुके हैं और इसी पृष्ठभूमि के आधार पर कांग्रेस को बीस वर्ष बाद कुटलैहड़ की विधानसभा जीत कर दे पाये थे। इस पृष्ठभूमि के साथ इनके ऊपर लगाये जा रहे आरोपों का क्षेत्र की जनता पर क्या असर पड़ेगा इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। लेकिन कुटलैहड़ के मंच से बागीयों पर पन्द्रह पन्द्रह करोड़ में बिकने का आरोप लगाकर मुख्यमंत्री ने इन लोगों को आक्रामक होने का जो न्योता दिया है उसके परिणाम दूरगामी होंगे। क्योंकि संयोगवश मुख्यमंत्री का अपना विधानसभा क्षेत्र इन चारों से भूटो, लखनपाल, आशीष शर्मा और राजेंद्र राणा के चुनाव क्षेत्र से घिरा हुआ है। इस कारण नादौन की एक एक गतिविधि पर सब की नजर लगी हुई है।

इन्हीं नजरों का परिणाम है कि बागीयों ने मुख्यमंत्री के आरोप के जवाब में मानहानि का नोटिस देते हुए स्टोन क्रेशर और ए.डी.बी. के प्रोजेक्ट की ओर इशारा किया है। नादौन में ए.डी.बी. से वित्त पोषित करीब 1200 करोड़ का पर्यटन एवं अन्य गतिविधियों के परिसर का निर्माण किया जा रहा है। एक ओर इसके लिए ए.डी.बी. से कर्ज लिया जा रहा है दूसरी ओर इसके लिए निवेशक तलाशने के लिए चंडीगढ़ में इन्वैस्टर मीट आयोजित की जा रही है जिस पर सुधीर शर्मा ने एतराज उठाया है। चर्चा है कि जहां पर यह परिसर प्रस्तावित है उसके आसपास विलेज कामन लैण्ड है जिसे कुछ प्रभावशाली लोगों ने खरीद रखा है और यह खरीद बेच ही अपने में एक बड़ा मुद्दा है। स्मरणीय है कि नादौन विधानसभा क्षेत्र किसी समय राजा नादौन की रियासत था। यह रियासत क्षेत्र के 329 गांवों में फैली हुई थी और 1897 में राजा नादौन को जालंधर कमिश्नर की ओर से जागीर के रूप में मिली थी। लेकिन राजा की मलकियत बनने के बाद साथ ही इस पर स्थानीय लोगों के बर्तनदारी के अधिकार भी सुरक्षित रखे गए थे। इन अधिकारों के कारण

शेष पृष्ठ 2 पर.....

क्या डॉ. सिंघवी की याचिका और बालूगंज थाना में जांचाधीन चल रही एफ.आई.आर.में कोई अन्त:संबंध है?

शिमला/शैल। कांग्रेस के प्रदेश से राज्यसभा उम्मीदवार रहे अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी के प्रवक्ता और सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील मनु सिंघवी ने यह चुनाव हारने के बाद प्रदेश उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की है। स्मरणीय है कि छ: कांग्रेस विधायकों और तीन निर्दलीयों द्वारा भाजपा प्रत्याशी हर्ष महाजन के पक्ष में मतदान करने से कांग्रेस और भाजपा दोनों के ही प्रत्याशियों को मतदान में 34/34 वोट पड़े हैं। ऐसे में बराबर वोट पढ़ने के बाद पर्ची के माध्यम से हार जीत का फैसला किया गया और उसमें भाजपा के हर्ष महाजन विजयी घोषित कर दिए गए। 27 फरवरी को यह मतदान हुआ और उसी दिन परिणाम भी घोषित हो गया। अब हर्ष महाजन बतौर राज्यसभा सांसद पद और गोपनीयता की शपथ भी ले चुके हैं। ऐसे में तुरंत प्रभाव से इस याचिका का कोई प्रभाव चुनाव परिणाम पर या उम्मीदवार पर होने वाला नहीं है। लेकिन जो विषय डॉ. सिंघवी ने उठाया है वह महत्वपूर्ण है और ऐसी स्थितियों के लिए नियमों में कोई प्रावधान किया जाना आवश्यक है। दुर्भाग्य से वर्तमान में संविधान में ऐसा कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं है। इस याचिका का कब क्या अंतिम फैसला आता है और उसके बाद संसद उस पर क्या रुख अपनाती है इसके लिए लंबे समय तक इंतजार करना होगा।

ऐसे में इस याचिका को लेकर एक रोचक पक्ष यह सामने आता है कि राज्यसभा में क्रॉसवोटिंग के बाद बागीयों को निष्कासित कर दिया गया और उनके स्थानों पर उपचुनाव होने भी अधिसूचित हो गए और सभी बागीयों को भाजपा ने अपना उम्मीदवार भी घोषित कर दिया है। इससे इस सारे खेल में भाजपा की भूमिका की पुष्टि हो जाती है। लेकिन निर्दलीयों को लेकर मामला अध्यक्ष के पास लंबित चल रहा है। इस संबंध में बालूगंज में एक एफ. आई.आर. भी दर्ज है जिसकी जांच चल रही है। इसकी जांच के आधार पर मुख्यमंत्री ने इन विधायकों के पन्द्रह – पन्द्रह करोड़ में बिकने का आरोप लगाया है। यदि इस जांच में सही में कोई ऐसे लेन देन का साक्ष्य पुलिस जुटा लेती है तो यह चालान कोर्ट में ले जाकर पूरे मामले का परिदृश्य बदलने का प्रयास किया जायेगा। उस स्थिति में डॉ.सिंघवी की याचिका की प्रसांगिकता भी बदल जाएगी। यदि पूरे खेल में भाजपा की इस तरह की संलिप्तता प्रमाणित हो जाती है तो क्या उसका असर राज्यसभा चुनाव प्रक्रिया पर नहीं पड़ेगा? यह एक महत्वपूर्ण सवाल हो जाता है। क्योंकि जिस तरह से इस चुनाव को चुनौती दी गई है उसको महज एक सैद्धांतिक नियम स्थापना के उद्देश्य से प्रेरित नहीं माना जा सकता।

ऐसे में याचिका को भाजपा के रणनीतिकार और विधि विशेषज्ञ कैसे लेते हैं और क्या रणनीति तय करते हैं आने वाले दिनों में दिलचस्प होगा। क्योंकि वर्तमान में प्रदेश का राजनीतिक वातावरण एफ.आई.आर. दर्ज होने और फिर

शेष पृष्ठ 2 पर.....

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने एपिक कार्डों का समयबद्ध वितरण करने के निर्देश दिए

शिमला/शैल। मुख्य निर्वाचन अधिकारी मनीष गर्ग ने निर्वाचन की तैयारियों के लिए उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक की अध्यक्षता की।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने जिला निर्वाचन अधिकारियों को नए मतदाताओं के नामांकन की अद्यतन प्रक्रिया में तेजी लाने और इस प्रक्रिया को समयबद्ध पूर्ण करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने मतदाता पहचान पत्रों एपिक का समयबद्ध वितरण करने पर भी बल दिया। उन्होंने बताया कि 10 मई, 2023 से अब तक कुल नये मतदाताओं की संख्या 181509 है। अब तक वितरित एपिक कार्डो की कुल संख्या 167135 है। उन्होंने जिला निर्वाचन अधिकारियों को डाक विभाग से नियमित रूप से वोटर कार्डो का समयबद्ध वितरण सुनिश्चित करने को भी कहा।

उन्होंने मतदाताओं की सुविधा के लिए सभी मतदान केन्द्रों में रैंप का निर्माण, शौचालय, स्वच्छ पेयजल की सुविधा इत्यादि के साथ-साथ शतप्रतिशत सुनिश्चित न्यूनतम सुविधाएं प्रदान करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने जिला निर्वाचन अधिकारियों को भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार वेबकास्टिंग के लिए मतदान केंद्रों को चिन्हित करने को भी कहा। उन्होंने उन स्थानों को भी चिन्हित करने के निर्देश दिए जहां इंटरनेट या कनेक्टिविटी इत्यादि की सुविधा के दृष्टिगत वेबकास्टिंग संभव नहीं है।

उन्होंने कहा कि जिन क्रिटिकल मतदान केन्द्रों में कनेक्टिविटी के कारण वेबकास्टिंग संभव नहीं है वहां उचित रूप से वीडियोग्राफी की जानी चाहिए। उन्होंने यह सुनिश्चित करने पर भी बल दिया कि सभी श्रेणियों की ईवीएम के लिए भंडारण और सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुसार किया जाए।

उन्होंने कहा कि लोकसभा निर्वाचन के साथ-साथ होने वाले उप-चुनावों को ध्यान में रखते हुए मतगणना स्थल, स्ट्रांग रूम, मतगणना के बाद ईवीएम के भंडारण आदि की पूरी सूची 10 अप्रैल, 2024 तक मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय को उपलब्ध करवाई जाए। उन्होंने नैक्स्टजेन डिस्ट्रिक्ट इंफारमेशन सिस्टम फ र एजुकेशन साफ्टवेयर पर मतदान कर्मियों की डाटा एंट्री 10 अप्रैल तक और 13 से 15 अप्रैल तक प्रथम रैंडमाइजेशन प्रक्रिया पूरी करने के निर्देश भी दिए।

उन्होंने प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में पर्यावरण मित्र सामग्री और स्थानीय कला और संस्कृति को प्रदर्शित करने वाला एक-एक 'हरित पोलिंग बूथ' स्थापित करने के निर्देश भी दिए।

उन्होंने उपायुक्तों से महिलाओं, युवाओं और दिव्यांगजनों द्वारा प्रबंधित किए जाने वाले मतदान केंद्रों का विवरण भी लिया। अब तक 150 महिला प्रबंधित मतदान केंद्र, 29 दिव्यांगजन प्रबंधित और 54 युवा प्रबंधित मतदान केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव है।

प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में लगभग चार मॉडल मतदान केन्द्र स्थापित किए जाएंगे, जिसके लिए जिला निर्वाचन अधिकारियों को प्रस्ताव भेजने के निर्देश दिए गए।

जसप्रीत को बनाया गया स्टेट इलेक्शन आइकॉन

शिमला/शैल। मण्डी जिला के अपर समखेतर क्षेत्र के निवासी 44 वर्षीय साइकलिस्ट जसप्रीत पाल को स्टेटइलेक्शन आइकॉन बनाया गया है। राज्य चुनाव विभाग की ओर से मुख्य निर्वाचन अधिकारी मनीष गर्ग और साइकलिस्ट जसप्रीत पाल के बीच एक समझौता दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए गए।

जसप्रीत पाल एक साइकलिस्ट होने के साथ-साथ एक पेशेवर फोटोग्राफर भी हैं। इसके अलावा, उन्होंने बाल साक्षरता, पर्यावरण संरक्षण जैसे सामाजिक सरोकारों में भी अपना अतुलनीय योगदान दिया है।

जसप्रीत पाल के साथ बातचीत करते हुए, मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने मतदाता जागरूकता के लिए हिमाचल में एक साइकल रिले रैली को आयोजित करने का भी सुझाव दिया।

इससे पहले, मीडिया से बातचीत में मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि अब तक जसप्रीत पाल ने विभिन्न दुर्गम इलाकों में लगभग 21 हजार किलोमीटर की दूरी तय की है और फायर फॉक्स चैलेंज साइक्लिंग चैंपियनशिप जीती है तथा 2021 में एमटीबी चैंपियनशिप में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि जसप्रीत पाल को स्टेट आइकॉन बनाने का निर्णय प्रदेश के शहरी और ग्रामीण युवाओं को निर्वाचन प्रक्रिया में शामिल करना है।

डिजिटल प्रौद्योगिकी एवं गवर्नेंस ने किया ओएनडीसी पर क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन

शिमला/शैल। सचिव डिजिटल प्रौद्योगिकी एवं गवर्नेंस डॉ. अभिषेक जैन ने डिजिटल प्रौद्योगिकी एवं शासन विभाग द्वारा ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स ओएनडीसी प्लेफॉर्म पर आयोजित क्षमता निर्माण कार्यशाला की अध्यक्षता की।

ओएनडीसी की उपाध्यक्ष अदिति सिंघा ने ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स की कार्यप्रणाली, उद्देश्य व लाभ पर प्रकाश डालते हुए एक व्यावहारिक प्रस्तुति दी। ओएनडीसी, भारत सरकार के उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग द्वारा स्थापित एक गैर-लाभकारी कंपनी है, जिसका उद्देश्य खुले ई-कॉमर्स मंचों को बढ़ावा देना है। कार्यशाला में बल दिया गया कि किस तरह से ओएनडीसी की कार्यप्रणाली और सरकारी विभाग ऑन बोर्डिंग प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाया जा सकता है।

डॉ. अभिषेक जैन ने कार्यशाला में अधिकारियों और कर्मचारियों से हिमाचल प्रदेश में स्थानीय उत्पादों की अप्रयुक्त क्षमता पर बल देते हुए ई-कॉमर्स मंचों का उपयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने स्थानीय उत्पादों को प्रभावी रूप से बाजार में उतारने और उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान करने के लिए सही मंच प्रदान करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने ओएनडीसी जैसे ई-कॉमर्स मंचों को व्यापक रूप से बढ़ावा देने का भी आहवान किया।

सचिव ग्रामीण विकास और पंचायती राज प्रियतु मंडल ने कहा कि इस प्लेटफार्म से विक्रेताओं को बड़े बाजार के प्रतियोगियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने का समान अवसर मिलेगा और खरीदारों को एक ही बार में विभिन्न उत्पादों की खरीदारी का अनुभव प्राप्त होगा।

डिजिटल प्रौद्योगिकी एवं गवर्नेंस के निदेशक डॉ. निपुण जिंदल ने कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि यह कार्यशाला प्रदेश में इस प्रकार की पहली कार्यशाला है।

कार्यशाला में निदेशक ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज, प्रबन्ध निदेशक कौशल विकास निगम सहित कई अन्य विभागों के विभागाध्यक्ष इस अवसर पर उपस्थित थे।

मुख्य सचिव ने नव अधिनियमित आपराधिक कानूनों के कार्यान्वयन संबंधी बैठक की अध्यक्षता की

शिमला/शैल। मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना ने नव अधिनियमित आपराधिक कानून भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम के कार्यान्वयन के संबंध में आयोजित बैठक की अध्यक्षता की।

मुख्य सचिव ने कहा कि प्रदेश में 1 जुलाई 2024 से नए कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए पुलिस और सभी संबंधित विभागों में उचित प्रबन्ध सुनिश्चित किए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि पुलिस, न्याय अधिकारियों, राज्य फोरेंसिक विज्ञान, जेल अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नए कानूनों के संबंध में डिजिटल तकनीक का प्रयोग कर प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि डिजिटाइजेशन को ध्यान में रखते हुए इन कानूनों में आधुनिक तकनीक को समाहित किया गया है।

मुख्य सचिव ने कहा कि कानून के प्रावधानों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए पुलिस के अपराध और आपराधिक नेटवर्क ट्रैकिंग सिस्टम में परिवर्तन किया जाएगा। इसके अंतर्गत सिस्टम के साफ्टवेयर को नए कानूनों के आधार पर अपडेट किया जाएगा।

बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव ओंकार चन्द शर्मा, पुलिस महानिदेशक संजय कुंडू, महानिदेशक कारावास एस. आर. ओझा, सचिव विधि शरद कुमार लगवाल, निदेशक अभियोजन मोहिन्द्र चौहान सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

शैल समाचार
संपादक मण्डल
संपादक- बलदेव शर्मा
सयुक्त संपादकःजे.पी.भारद्वाज
विधि सलाहकार: ऋचा शर्मा

क्या डॉ. सिंघवी की याचिका .....पृष्ठ 1 का शेष

पन्द्रह-पन्द्रह करोड़ में बिकने के आरोप लगने तथा इन आरोपों पर बागीयों द्वारा अपनायी आक्रमकता को यदि एक साथ रख कर देखा जाये तो डॉ. सिंघवी की याचिका की प्रसांगिकता ही बदल जाती है। विश्लेषकों का मानना है की बालूगंज थाना में चल रही जांच और उसके बाद आयी इस याचिका मे कोई अन्त: संबंध आवश्यक है।

मुख्यमंत्री और बागी आये ....पृष्ठ 1 का शेष

ही यह राजस्व रिकॉर्ड में विलेज कामन लैण्ड बनी। जब हिमाचल में लैण्ड सीलिंग अधिनियम लागू हुआ तब यह जमीने सरप्लस घोषित होकर सरकार में विहित कर दी गयी। राजा नादौन को केवल 316 कनाल का एक यूनिट ही मिला। इस तरह इस जागीर की करीब 1,59,486 कनाल सीलिंग में सरकार के पास आ गयी। 22-11-75 को इस संबंध में अदालत का अंतिम फैसला भी आ गया। इस पर लोगों के बर्तनदारी हक भी सुरक्षित रहे लेकिन बर्तनदार इन जमीनों के मालिक नहीं बने।

लेकिन लैण्ड सीलिंग अधिनियम लागू होने और 22-11-75 को अदालत का फैसला आने के बाद भी आज तक राजा नादौन के नाम से ऐसी जमीनों की खरीद बेच चालू है। कुछ लोगों ने तो लैण्ड सीलिंग सीमा से अधिक खरीददारी कर रखी है। अब जब हिमाचल सरकार ने लैण्ड सीलिंग एक्ट में संशोधन किया तब यह नादौन का मामला कुछ लोगों के संज्ञान में आया है। इस पर यह सवाल उठने लगे हैं कि जब प्रदेश में कोई व्यक्ति 316 कनाल या 161 बीघा से अधिक का मालिक ही नहीं हो सकता तो वह इस सीमा से अधिक जमीन खरीद कैसे हो गयी। राजस्व अधिकारी ऐसे मामलों में क्यों खामोश बैठे हुए थे। फिर जब यह जमीन विलेज कामन लैण्ड की श्रेणी में आती थी तब इनकी खरीद बेच कैसे हो गयी। राजनीतिक नेतृत्व को इसका पता क्यों नहीं चला। क्या यह सब प्रशासन के सहयोग से हो रहा था। सूत्रों के मुताबिक यह कांग्रेस के बागी इस मुद्दे पर काम कर रहे हैं और शीघ्र कोई बड़ा धमाका करने वाले हैं।

नोटों के दम पर सत्ता हथियाना चाह रहे जयराम:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने शुक्रवार को बागी विधायकों और नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर पर एक बार फिर तीखा हमला बोला। नादौन में पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा

कि धर्मशाला के पूर्व विधायक सुधीर शर्मा बागियों के सरगना हैं, उन्हें 15 करोड़ रुपये से भी अधिक मिले होंगे। भाजपा में गए छह पूर्व विधायकों के सभी कारनामे जनता की अदालत में सामने आएंगे। जिन्होंने आय से अधिक संपत्ति अर्जित की है, उनके मामले भी खोले जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर की सत्ता की भूख ज्यादा बढ़ गई है। वोट के दम पर सरकार नहीं बना सके तो अब नोटों के दम पर सत्ता हथियाना चाह रहे हैं। जनता भाजपा को नकार चुकी है, यह जयराम ठाकुर को दिमाग में बिठा लेना चाहिए। अन्य प्रदेशों में भाजपा ने नोटों के दम सत्ता हथियाई, वैसा ही हिमाचल में करना चाह रहे थे। लेकिन, भगवान हमारे साथ हैं और उन्होंने हमें जनता की सेवा का मौका दिया है।

ठाकुर सुखविंदर सिंह ने कहा कि बिकाऊ को जनता कभी जिताऊ नहीं बनाएगी। बागी विधायकों के विधानसभा क्षेत्रों में 300 से 400 करोड़ रुपये के काम हुए हैं। उनकी मर्जी के एसडीएम, बीडीओ, तहसीलदार, अधिशाषी अभियंता और एसडीओ लगाए, फिर भी बिक गए। राजनीति में यह नहीं होना चाहिए कि चुनाव में जो राशि खर्च की है, विधायक बनने के बाद उसे पूरा करने में जुट जाएं और कमाई न हो तो सरकार गिराने की साजिश रच दें। बिकाऊ विधायकों का चरित्र जनता के सामने बेनकाब हो चुका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस ने आजादी से पहले और बाद में भी लड़ाई लड़ी। पहले देश को आजाद कराने की लड़ाई थी, बाद में देश को अपने पैरों पर खड़ा करने की। जब देश आजाद हुआ तब सुई तक नहीं बनती थी। कांग्रेस के दो प्रधानमंत्रियों, एक पूर्व मुख्यमंत्री सहित अनेक नेताओं व कार्यकर्ताओं ने देश के लिए अपने प्राण न्योछावर किये हैं। कांग्रेस की विचारधारा देश को आगे बढ़ाने की है।

कांग्रेस का न्यायपत्र देश में हो रहे अन्याय के खिलाफ कांग्रेस की गारंटी:प्रतिभा सिंह

शिमला/शैल। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद प्रतिभा सिंह ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा लोकसभा चुनावों के लिये जारी न्याय पत्र की सराहना करते हुए कहा है कि कांग्रेस ने लोकसभा चुनावों के लिए अपने घोषणा पत्र में पांच न्याय व 25 गारंटी

को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा है कि कांग्रेस किसी भी प्रकार की असमानता को दूर करने के प्रति बचनबद्ध है। कांग्रेस जो कहती है उसे वह हर हाल में पूरा करती है। उन्होंने कहा है कि कांग्रेस के न्याय पत्र में पांच न्याय व 25 गारंटी देश में किसी भी प्रकार की असमानता को दूर करना जिसमें सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक प्रमुख है कि वचनद्धबता की प्रतिबद्धता का वादा है। केंद्र में इंडिया गठबंधन की सरकार बनने पर इसे अक्षरस: लागू किया जायेगा।

प्रतिभा सिंह ने कहा है कि आज जिस प्रकार से लोगों के साथ अन्याय हो रहा है, राजनैतिक दलों के नेताओं को जेलों में डाला जा रहा है, जांच एजेंसियों का दुरुपयोग हो रहा है वह सब देश के लोकतंत्र के लिये एक बड़ा खतरा है और इस खतरे को दूर करने के लिये कांग्रेस पूरी तरह बचनबद्ध है।

प्रतिभा सिंह ने कहा है कि देश मे बढ़ती महंगाई व बेरोजगारी ने आज पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए है। भाजपा ने हर साल एक करोड़ लोगों को रोजगार देने व हर एक के खाते में 15 लाख देने का वादा किया था जो आज दिन तक पूरा नही हुआ।

प्रतिभा सिंह ने कहा है कि कांग्रेस का न्यायपत्र देश में हो रहें अन्याय के खिलाफ कांग्रेस की गारंटी है। उन्होंने कहा कि बेरोजगारी व मंहगाई पर काबू पाने में एनडीए सरकार पूरी तरह विफल रही हैं। कांग्रेस इस समस्या को दूर करने के लिये कारगर कदम उठाएगी।

भाजपा का ऑपरेशन लोट्स हुआ फ्लॉप:हर्षवर्धन चौहान

शिमला/शैल। उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान ने कहा है कि भाजपा का ऑपरेशन लोट्स फ्लॉप हो गया है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने जिस प्रकार प्रदेश कांग्रेस सरकार को अस्थिर करने की कोशिश की है उसमें उसे मुंह की

खानी पड़ी। कांग्रेस प्रदेश की चारों लोकसभा सीटों के साथ साथ छह के छह विधानसभा उप चुनावो में अपनी जीत का परचम लहरायेगी। पत्रकार सम्मेलन को संबोधित करते हुए हर्षवर्धन चौहान ने कहा कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार के पास पूर्ण बहुमत है और सुक्खू सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेंगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस अपने 15 माह की उपलब्धियों पर यह चुनाव जीतेगी।

हर्षवर्धन चौहान ने कहा कि सरकार ने अपनी पहली मंत्रिमंडल की बैठक में कर्मचारियों की ओपीएस की गारंटी को पूरा कर एक इतिहास रचा है। उन्होंने कहा कि दूसरी गारंटी महिलाओं को 1500 रुपए लाहुल स्पीति जिला से शुरू की है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के अन्य जिलों में भी इसकी प्रकिया शुरू कर दी थी, पर भाजपा ने इसे रुकवा दिया है। इससे साफ है कि भाजपा महिला हितैषी नही है।

हर्षवर्धन चौहान ने कहा कि प्रदेश सरकार ने अपने 15 माह के कार्यकाल में 22 हजार पद स्वीकृत किये है। उन्होंने कहा कि सरकार ने एक लाख नौकरियां देने की गारंटी दी है जिसे वह अपने इस कार्यकाल में पूरा करेगी।

हर्षवर्धन चौहान ने कहा कि कांग्रेस ने प्रदेश की सभी विधानसभा क्षेत्रों में डे बोर्डिंग स्कूल खोलने की गारंटी में भी अब तक 68 मे से 45 विधानसभा क्षेत्रों में कार्य प्रगति पर है। इसी तरह प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार करते हुए आदर्श अस्पताल खोल दिये गए है जहां विशेषज्ञ सुविधाएं उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार अपनी सभी गारंटियों को हर हाल में पूरा करेगी।

हर्षवर्धन ने कहा कि प्रदेश में पहली बार राजस्व अदालतों में एक लाख से अधिक राजस्व मामले सुलझाए गए। उन्होंने कहा कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार जनहित को सर्वोपरि मानते हुए जन आकांक्षाओं को पूरा कर रही है।

हर्षवर्धन चौहान ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि कांग्रेस का कोई भी विधायक अब भाजपा में जाने वाला नही। उन्होंने कहा कि जिन कांग्रेस विधायकों ने पासा पलटा है उन्होंने प्रदेश की जनता विशेष तौर पर अपने विधानसभा क्षेत्र के लोगों के विश्वास को तोड़ा है जिन्होंने उन्हें कांग्रेस के टिकट पर अपना वोट देकर विधानसभा में भेजा था। उन्होंने कहा कि इस विश्वासघात के लिये उन्हें क्षेत्र के लोग कभी माफ नही करेंगे और इन उप चुनावों में करारी हार का मुंह देखना पड़ेगा।

भाजपा ने प्रदेश पर उपचुनाव थोप कर विकास की गति को प्रभावित किया:जगत सिंह

शिमला/शैल। बागवानी एवं राजस्व मंत्री जगत सिंह ने कहा है कि बालूगंज थाने में दर्ज एफआईआर की जांच रिपोर्ट से स्पष्ट हो गया है कि भाजपा ने धनबल व प्रलोभन पर प्रदेश सरकार को अस्थिर करने के लिये कोशिश की है। कांग्रेस के छ: विधायकों व तीन निर्दलीय विधायको पर करोड़ो खर्च किये गए। उन्हें हैलीकॉप्टर में लाया ले जाया गया। एक महीने से अधिक समय तक इन्हें बंधक बना कर रखा गया जो पूरी तरह अपराध बनता है। पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए जगत सिंह नेगी ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर, इनके अध्यक्ष राजीव बिंदल व अन्य भाजपा नेताओं ने 27 फरवरी को राज्यसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस प्रत्याशी के पोलिंग एजेंट के साथ बदसलूकी करते हुए इस चुनाव में व्यवधान डाला। विधानसभा परिसर के गेट को तोड़ने की कोशिश की गई। इस सबकी शिकायत कांग्रेस ने चुनाव आयोग से की है पर आयोग ने अभी तक इस पर कोई कार्यवाही नही की है।

जगत नेगी ने कहा कि तीन निर्दलीय विधायकों पर भाजपा का डर व भारी दबाव है। उन्होंने कहा कि उन्होंने स्वेच्छा से त्यागपत्र नही दिया है। उन्होंने कहा कि विधानसभा अध्यक्ष इसकी पूरी जांच कर रहें है और इसके बाद ही इस पर कोई निर्णय होगा।

उन्होंने कहा कि भाजपा ने प्रदेश पर उप चुनाव थोप कर विकास की गति को प्रभावित किया है। उन्होंने कहा कि कबायली क्षेत्रों में जहां भारी बर्फबारी की बजह से विकास कार्यो के निर्माण को बहुत कम समय मिलता है वहां यह कार्य पूरी तरह रुक गया है। उन्होंने कहा कि भाजपा के साथ साथ पार्टी से गद्दारी करने वाले किसी भी नेता को प्रदेश के लोग कभी माफ नही करेंगे।

जनता का आशीर्वाद वर्तमान सरकार के साथ:अनिरुद्ध सिंह

शिमला/शैल। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री अनिरुद्ध सिंह ने कहा है कि भाजपा को धन-बल का घमंड सिर चढ़कर बोल रहा है और भाजपा नेताओं के अहंकार को

प्रदेश की जनता देख रही है। उन्होंने कहा कि धन-बल के ज़रिए भाजपा नेता हिमाचल प्रदेश सरकार को अस्थिर करने का असफल प्रयास कर रहे हैं। हॉर्स ट्रेडिंग कर भाजपा ने राज्यसभा सीट के लिए हुए चुनाव में छ: कांग्रेस विधायकों से क्रॉस वोटिंग करवाई और सरकार गिराने की साज़िश रची। उन्होंने कहा कि भाजपा का असली चेहरा राज्य की जनता के सामने आ चुका है और अब यह बात घर-घर पहुँच गई है कि भाजपा ही इस पूरे षडयंत्र के पीछे थी। भाजपा नेता अहंकार में हैं, लेकिन कांग्रेस के पास जनबल है और हमें इस बात का पूर्ण विश्वास है कि आगामी लोकसभा चुनाव और छह विधानसभा सीटों के लिए होने वाले चुनाव में जनता भाजपा को करारा जवाब देगी। उन्होंने कहा कि पिछले सवा साल के कार्यकाल में मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व में वर्तमान प्रदेश सरकार ने हर वर्ग के कल्याण के लिए योजना बनाकर उसे धरातल पर उतारा। प्रदेश की जनता का आशीर्वाद मुख्यमंत्री के साथ है और वर्तमान प्रदेश सरकार पांच वर्ष का कार्यकाल पूरा करेगी।

अनिरुद्ध सिंह ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर, सत्ता के लालच में हिमाचल प्रदेश की संस्कृति को अपमानित करने में लगे हैं। हिमाचल प्रदेश के लोग बिकाऊ नहीं हैं, जबकि जयराम ठाकुर नोटों के दम पर जनमत की क़ीमत तय कर रहे हैं।

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री ने कहा कि अपनी पार्टी से ग़द्दारी करने वाले बाग़ियों को प्रदेश की जनता सबक़ सीखाएँगी। उन्होंने अपने चुनाव क्षेत्र की जन भावनाओं का अपमान किया है। उनकी हार निश्चित है और अपने ईमान को बेचने की सजा उन्हें हर हाल में मिलेगी।

न बागियों के सपने पूरे होंगे और न ही भाजपा के अरमान:संजय अवस्थी

शिमला/शैल। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नव नियुक्त कार्यकारी अध्यक्ष मुख्य संसदीय सचिव संजय अवस्थी ने पार्टी कार्यकर्ताओं का एकजुट होने व लोकसभा चुनावों में पार्टी की नीतियों व निर्णयों का व्यापक प्रचार प्रसार करने का आहवान किया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कांग्रेस के पास जनमत हैऔर इसे कोई चुरा नही सकता।

प्रदेश कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन में पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष पद संभालने पर उनके सम्मान में आयोजित अभिनंदन समारोह में संजय अवस्थी ने उनकी इस नई ताजपोशी के लिये राष्ट्रीय नेतृत्व, प्रदेश नेतृत्व व मुख्यमंत्री सहित सभी नेताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती के लिये वह दिन रात एक कर देंगे।

अवस्थी ने भाजपा की आलोचना करते हुए कहा कि उन्होंने प्रदेश की कांग्रेस सरकार को अस्थिर करने की जो कोशिश की है उसके लिए प्रदेश के लोग उसे कभी माफ नही करेंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के छ: विधायकों ने पार्टी की पीठ पर छुरा घोपने की कोशिश की है, उसके लिए उसे प्रदेश के लोग कभी माफ नही करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कांग्रेस सभी चारों लोकसभा सीटों के साथ साथ छ: विधानसभा उप चुनावों में भी शानदार जीत हासिल करेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा करेगी। उन्होंने कहा कि न तो बागियों के सपने पूरे होंगे और न ही भाजपा के अरमान। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कांग्रेस बहुत ही मजबूत है और इसी मजबूती के साथ निरंतर आगे बढ़ रही है।

मस्तिष्क की शक्तियां सूर्य की किरणों के समान हैं। जब वो केन्द्रित होती हैं, चमक उठती हैं।

..... स्वामी विवेकानंद

सम्पादकीय

चुनाव की विश्वसनीयता के लिये वी.वी. पैट की शत प्रतिशत गिनती होनी चाहिये

भाजपा ने इस लोकसभा चुनाव के लिये अब की बार चार सौ पार का नारा लगाया हुआ है। इसी के साथ दूसरे दलों के एक लाख लोगों को भाजपा में शामिल करने का लक्ष्य रखा है। अब तक अस्सी हजार लोगों को शामिल करवा लिये जाने का दावा किया जा रहा है। अब तक किस दल से कितने पूर्व मुख्यमंत्री, मंत्री, सांसद और पूर्व विधायक तथा अन्य पदाधिकारी भाजपा में शामिल हो चुके हैं इसकी सूचियां प्रसारित की जा रही हैं। यदि सही में भाजपा के प्रति इस स्तर की कोई वैचारिक स्वीकृति बनती जा रही है तो इसका स्वागत किया जाना चाहिये। यदि ऐसा केन्द्रीय जांच एजैन्सीयों के राजनीतिक दुरुपयोग से हो रहा है तो यह निश्चित रूप से सभी के लिये आने वाले समय में घातक सिद्ध होगा। पिछले दोनों आम चुनावों में भाजपा की जीत का आंकड़ा हर बार बढ़ा है। हर चुनाव के दौरान दूसरे दलों में तोड़फोड़ हुई है। हर चुनाव के लिये एक आंकड़ा पहले ही उछाल दिया जा रहा है। और फिर हर संभव मंच से उसका प्रसार करवाया जाता रहा है ताकि परिणाम के दिन किसी को यह अजीब सा न लगे। लेकिन हर चुनाव के बाद ई.वी.एम. मशीनों की विश्वसनीयता पर सवाल भी उठते रहे हैं। यह आरोप लगते रहे हैं कि ई.वी.एम. हैक हो सकती है बल्कि इन्हीं आरोपों के साये में आयी डॉ. स्वामी की याचिका के बाद इन मशीनों में वी.वी.पैट का प्रावधान किया गया। ई.वी.एम को लेकर एक दर्जन से भी अधिक याचिकाएं विभिन्न उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय में आ चुकी हैं। बल्कि इसी दौरान उन्नीस लाख ई.वी.एम. मशीनों के गायब होने का सच भी आर.टी.आई. के माध्यम से बाहर आ चुका है। जिस पर अभी तक कोई निर्णायक कारवाई नहीं हो पायी है। जब किसी चयन प्रक्रिया पर सवाल उठने शुरू हो जाते हैं तो उस चयन के परिणामों की विश्वसनीयता स्वत: ही प्रश्नित हो जाती है। 2019 के चुनाव में 542 लोकसभा चुनाव क्षेत्रों में से 373 चुनाव क्षेत्रों में कुल डाले गये वोटो और गिने गये वोटो में बड़ा अन्तराल पाया गया था। लेकिन परिणाम भाजपा के घोषित और प्रचारित आंकड़े के करीब रहे। स्वभाविक है कि जब 542 में से 373 चुनाव क्षेत्रों में इस तरह की विसंगति सामने आयेगी तो कोई भी व्यक्ति ऐसे परिणाम पर विश्वास कैसे कर पायेगा। यदि चुनाव परिणामों की अपनी विश्वसनियता ही सन्देह के दायरे में आयेगी तो ऐसे परिणाम के आधार पर बनाई गयी सरकार की स्वीकार्यता कैसे बन पायेगी। स्वभाविक है कि ऐसी बनी सरकार को उसकी एजैन्सीयों के दुरुपयोग करने से नहीं रोका जा सकता। चुनाव में यदि विश्वसनीयता की कमी होगी तो उसके परिणाम किसी भी गणित से देश के लिये शुभ नहीं हो सकते। इस समय सर्वोच्च न्यायालय के पास ए.डी.आर और इंडिया गठबंधन की याचिका विचाराधीन चल रही है। इसमें यह मांग की गयी है कि वी.वी.पैट की पर्ची को स्वयं मतदाता चुनाव बॉक्स में डालें। इसका प्रावधान किया जाये। दूसरी मांग यह है कि शत प्रतिशत वी.वी.पैट की गणना सुनिश्चित की जाये जो अभी 5% ही है। इस मांग पर चुनाव आयोग का यह ऐतराज है कि इससे मतगणना और परिणाम घोषित करने में पांच–छ: दिन का और समय लग जायेगा। जब पहले ही चुनाव प्रक्रिया इतनी लंबी कर दी गयी है तो उसमें छ: दिन का और समय लग जाने से कोई अन्तर नहीं आयेगा। चुनाव की विश्वसनीयता स्थापित करने के लिये सर्वोच्च न्यायालय को यह मांग स्वीकार कर लेनी चाहिये और चुनाव आयोग को भी इसका विरोध नहीं करना चाहिये।

नवरात्र मात्र उपवास और कन्याभोज नहीं है

डॉ नीलम महेन्द्र

चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा यानी नव संवत्सर का आरम्भ। ऐसा नववर्ष जिसमें सम्पूर्ण सृष्टि में एक नईऊर्जा का संचार हो रहा होता है। एक तरफ पेड़ पौधों में नई पत्तियां और फूल खिल रहे होते हैं तो मौसम भी करवट बदल रहा होता है। शीत ऋतु जा रही होती है, ग्रीष्म ऋतु आ रही होती है और कोयल की मनमोहककूक वातावरण में रस घोल रही होती है। देखा जाये तो प्रकृति हर ओर से नवीनता और बदलाव का संदेश दे रही होती है।

सनातन संस्कृति में यह समय शक्ति की अराधना का होता है जिसे नवरात्र के रूप में मनाया जाता है। नौ दिनों तक देवी माँ के विभिन्न रूपों की पूजा की जाती है। लोग अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार इन दिनों उपवास रखते हैं और कन्या भोज के साथ माता को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं।

दरअसल यह सनातन संस्कृति की महानता है कि इसमें अत्यंत गहरे और गूढ़ विषयों को जिनके पीछे बहुत गहरा विज्ञान छिपा है उन्हें बेहद सरलता के साथ एक साधारण मनुष्य के सामने प्रस्तुत किया जाता है। इसका सकारात्मक पक्ष तो यह है कि एक साधारण मनुष्य से लेकर एक बालक के लिए भी वो विषय ग्रहण करना इतना सरल हो गया कि वो उनके जीवन का उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन गया। लेकिन इसका नकारात्मक पक्ष यह हुआ कि वो गहरे विषय हमारी दिन चर्या तक ही सीमित रह गए और उनके भाव, उनके लक्ष्य हमसे कहीं पीछे छूट गए।

नवरात्र को ही लीजिये आज यह केवल उपवास रखने और कन्या भोज कराने तक ही सीमित रह गये। इसके आध्यात्मिक वैज्ञानिक और व्यवहारिक पक्ष के विषय पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता।

इसके वैज्ञानिक पक्ष की बात करें तो नवरात्र साल में चार बार मनाई जाती हैं, चैत्र नवरात्र, शारदीय नवरात्र और दो गुप्त नवरात्र। हर बार दो ऋतुओं के संकर काल में यानी एक ऋतु के जाने और दूसरी ऋतु के आने के पहले। आज विज्ञान के द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि ऋतु संकर के समय मानव शरीर बदलते वातावरण से तारतम्य बैठाने के लिए संघर्ष कर रहा होता है और इस दौरान उसकी पाचन शक्ति, उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होती है। ऐसे समय मे उपवास न सिर्फ मनुष्य के पाचन तंत्र को सुधारने का काम करता है बल्कि उसे डिटॉक्स करके उसमें एक नई ऊर्जा का संचार भी करता है।

किन्तु महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि नवरात्र का महत्व मात्र हमारे शरीर की शक्ति एवं उसकी ऊर्जा

बढ़ाने तक ही सीमित नहीं है बल्कि उससे कहीं बढ़कर है। नवरात्र का समय अपनी खगोलीय घटनाओं के कारण प्रकृति का वो समय होता है जब मनुष्य अपने मानव जन्म का सर्वश्रेष्ठ लाभ ले सकता है। नवरात्र का आध्यात्मिक पक्ष यह है कि इस समय मनुष्य अपनी शारिरिक शक्तियों से ऊपर उठकर अपने मानस एवं आत्मबल का विकास कर सकता है। नौ दिनों तक व्रत एवं व्रत के नियम हमें अपनी आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित करने में मदद करते हैं।

लेकिन वैज्ञानिक और आध्यात्मिक पक्ष से इन नवरात्र का एक व्यवहारिक पक्ष भी है। देखा जाये तो मां के नौ रूपों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। कहा जाता है कि मां दुर्गा ने ये सभी नौ अवतार इस धरती पर अधर्म और पाप के नाश दैत्यों के विनाश तथा धर्म की स्थापना के उद्देश्य से लिए थे। तो क्यों न हम भी इस समय का उपयोग अपने भीतर के पाप और अधर्म का नाश करने के लिए करें, अपने भीतर के शत्रुओं के विनाश के लिए करें। गीता में कहा गया है कि काम क्रोध लोभ मोह अहंकार और ईर्ष्या मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं। नवरात्र के दौरान हम माँ के हर रूप से सफलता के मंत्र सीखकर अपने भीतर के इन शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। अगर हम गम्भीरता से सोचें तो पाएंगे कि मां के हर रूप का नाम उनके व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए हमें अनूठा संदेश देता है।

जैसे मां शैलपुत्री (यानीहिमालय की पुत्री) से शिला अर्थात चट्टान की तरह दृढ़ आत्मबल। मां ब्रह्मचारिणी (यानी ब्रह्म के समान आचरण) से अपने आचरण मेंअनुशासन। मां चंद्रघंटा (इनके माथे पर चन्द्र के आकार का घण्टा है) से अपने मन को कठिन से कठिन परिस्थिति में चंद्रमा जैसा शीतल यानी ठंडा रखना। मां कुष्मांडा (कूयानी छोटा ऊष्मा यानी ऊर्जा) से स्वयं को सदैव सकारात्मक ऊर्जा से भरे रखना। मांस्कंदमाता (इनकी गोद में बालक कार्तिकेय हैं) से अपने भीतर करुणा ममता प्रेम और संवेदनशीलता जैसे गुणों को हमेशा बना कर रखना। मां कात्यायनी (स्वास्थ्य और चिकित्सा की देवी) से स्वास्थ्य की महत्ता क्योंकि स्वस्थ रहकर ही अपने लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है। माँ कालरात्रि (महाशक्तिशाली और अपराजेय दैत्यों का नाश करने वाली) से जुनून की हद तक लक्ष्य हासिल करने का जज्बा क्योंकि इसके बिना कठिन लक्ष्य प्राप्त करना असंभव है। मां महागौरी (ये गौर वर्ण की हैं) से जीवन के हर कदम पर अपना आचरण चरित्र और चित को उज्ज्वल एवं स्वच्छ रखना ताकि कहीं कोई दाग लगने की गुंजाइश न हो। और अंत में मां सिध्दरात्री (सफलता देने वाली) जब हम नवरात्र में माँ के इन आठ रूपों की सच्चे मन से अराधना करते हैं तो मां सिध्दरात्री सफलता देती हैं। इसी प्रकार जब हम नवरात्र के व्यवहारिक पक्ष को अपने जीवन में उतार कर इन आठ सूत्रों को अपने आचरण में अनाएँगे तो निसन्देह हमें सफलता की सिद्धि प्राप्त होगी।

तो इस बार नवरात्र को मात्र उपवास एवं कन्या भोज तक सीमित न रखें बल्कि इस बार नवरात्र में शरीर के साथ साथ मन और आत्मा को भी शुद्ध एवं डिटॉक्स करके अपने जीवन में नई ऊर्जा नई शक्ति को महसूस करें।

या देवी सर्वभूतेषुशक्तिरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।

कांग्रेस टूटती-बिखरती रहेगी लेकिन खत्म कभी नहीं होगी

गौतम चौधरी

कांग्रेस टूटती-बिखरती रही है और आगे भी ऐसा ही होता रहेगा लेकिन खत्म नहीं होगी। उसकी कम सीटों पर हंसने वाली भारतीय जनता पार्टी को यह समझना चाहिए कि किसी समय उसके पास मात्र दो सीटें थी।

अभी हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर कांग्रेस के घोषणापत्र पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि यह मुस्लिम लीग का घोषणापत्र जैसा लगता है। इसमें कितनी सत्यता है यह तो शोध का विषय है लेकिन प्रधानमंत्री जिस पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार के मुखिया हैं उसने इस बार के लोकसभा चुनाव में उन तमाम नेताओं का टिकट काट दिया है जो हिंदुत्व की मुख्यधारा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उसके स्थान पर पार्टी ने कांग्रेस से आयातित नेताओं को तरजीह दी है और उसमें से तो कई को राज्यसभा तक भेज दिया। यदि हम झारखंड की बात करें तो भाजपा कोटे से कुल 13 लोकसभा सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए गए हैं, जिसमें से 11 उम्मीदवार दूसरी पार्टी से आए हुए हैं और एक पलामू लोकसभा क्षेत्र के उम्मीदवार वीडी राम किसी जमाने में विचारधारा के खिलाफ काम करने में माहिर थे। बिहार में भी उसी प्रकार का माहौल है। जिस अधिकारी ने भारतीय जनता पार्टी के मूल चिंतन को भगवा आतंकवाद से जोड़ा आज वे पार्टी के प्रभावशाली नेता हैं। बिहार हो या उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश हो या राजस्थान, गुजरात हो या महराष्ट्र भारतीय जनता पार्टी ने अधिकतर कांग्रेस के उन नेताओं को अपनी पार्टी में लाकर उन्हें महत्वपूर्ण भूमिका में खड़ा किया है जो किसी समय भाजपा चिंतन के खांटी आलोचक रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के एक चाकलेटी नेता कांग्रेस का दामन छोड़ भाजपा की सदस्यता ली, तब कुछ लोगों को शायद लगा होगा कि भारत तेजी से कांग्रेस-मुक्त हो रहा है। 1971 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का मुख्य नारा था-'गरीबी हटाओ'। मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मुख्य नारा है-कांग्रेस हटाओ, जिसे वे अपने खास अंदाज में 'कांग्रेस-मुक्त भारत' कहते हैं। यह सही है कि कांग्रेस के लिए रोज-रोज बुरी खबरें आ रही हैं। यह भी सही है कि कांग्रेस अपने सबसे संकट काल से गुजर रही है। 2014 से वह केंद्रीय स्तर पर सत्ता से तो बाहर है ही, प्रांतों में भी उनकी सरकारें एक-एक कर टूट-बिखर रही हैं।

ऐसे में यह प्रश्न तो है कि क्या कांग्रेस धीरे-धीरे सचमुच विनष्ट हो जाएगी? यदि मुझसे कोई सवाल पूछे तो मैं कहूंगा, ऐसा नहीं हो सकता है। मैंने इस पर अपने तरीके से सोचा है। कांग्रेस के इतिहास पर एक विहंगम दृष्टि डालें तो 1883 में एक अंग्रेज अधिकारी, एओ ह्यूम ने कोलकता के स्नातकों के नाम एक खुला पत्र लिखा था, जिसमें वह एक ऐसे संगठन की जरूरत बताया, जो अंग्रेजी राज और भारत के प्रतिनिधि तबके के बीच संवाद का माध्यम बन सके। दो वर्ष बाद 28-31 दिसंबर 1885 को मुंबई में कुल 72 प्रतिनिधियों की एक सभा में इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई। उमेश चंद्र बनर्जी इसके प्रथम अध्यक्ष चुने गये। दादा भाई नवरोजी और दिनेश वाचा जैसे लोग इसके संस्थापक सदस्य थे। अगली दफा के सालाना अधिवेशन में बाल गंगाधर तिलक और महादेव गोविन्द रानाडे भी इस संगठन से जुड़ गए।

दस साल के भीतर ही इस संगठन में वर्चस्व को लेकर गतिरोध प्रारंभ हो गया। कांग्रेस में विभाजन के कई बीज उसी समय अंकुरित हो चुके थे। ऐसा इसलिए भी हुआ कि खुद फिरंगी कांग्रेस को मजबूत नहीं होने देना चाहते थे। उस वक्त उन्होंने डॉ.अंबेडकर को आगे कर संगठन को कमजोर करने की कोशिश की। इसके बाद गरम दल और नरम दल में कांग्रेस विभाजित हो गयी। धर्म और संप्रदाय के आधार पर भी कांग्रेस में मतभेद उभरे जिसके कारण इंडियन मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। उसकी प्रतिक्रिया में पहले हिन्दू महासभा और बाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई। कांग्रेस के अंदर खुद जवाहर लाल नेहरू आदि नेताओं ने एक समाजवादी घरा खड़ा कर दिया। इस प्रकार कांग्रेस कई भागों में विभाजित होती चली गयी लेकिन भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की धूरि बनी रही।

1915 में गांधी दक्षिण अफ्रीका से लौटकर भारत आते हैं और सर्वप्रथम उन दिनों के कद्दावर नेता गोपाल कृष्ण गोखले के निजी सचिव बनाये गये। 1909 में लिखी उनकी किताब 'हिन्द स्वराज' में उस समय के भारतीय लोकमानस की एक झलक मिलती है। 1917 में गांधी चम्पारण के किसान आंदोलन को व्यवस्थित करने लगे। इसके बाद वे राष्ट्रीय नेता हो गए और वर्ष 1920 से कांग्रेस उनके नेतृत्व में आ गयी। गांधी के नेतृत्व में ही कांग्रेस किसानों, कामगारों और छोटे व्यापारियों की पार्टी बनी। इसके पहले कांग्रेस केवल प्रभावशाली वकीलों की पार्टी थी, नख-दंत विहीन थी और फिरंगी हुकूमत के लिए सेफ्टी वाल्व का काम कर रही थी। कांग्रेस मुख्यत: वकीलों और जमींदारों की एक महासभा थी, जिसके सालाना अधिवेशन बड़े लोगों की पिकनिक पार्टियों की तरह होते थे। इसका अनुभव जवाहरलाल नेहरू ने 1912 के बांकीपुर (पटना) अधिवेशन में किया था। अपनी आत्मकथा में इस अनुभव को उन्होंने तसल्ली से व्यक्त किया है।

गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस कायांतरित चट्टान की तहर मजबूत और प्रभावशाली बन गयी। कांग्रेस को उन्होंने जमीन पर उतारने की हर संभव कोशिश की। इस कोशिश में कुछ दकियानूसी फैसले भी लिये गये। खिलाफत आंदोलन का समर्थन कुछ ऐसे ही फैसले थे लेकिन ने कांग्रेस को एक धारदार संगठन बना दिया था। कांग्रेस सदस्यों के लिए सूत कातना आवश्यक कर गांधी ने कांग्रेस में शामिल बड़े लोगों को भी आंशिक ही सही, मेहनतकश बना दिया था। मोतीलाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, राजा जी पट्टाभी सीतारमैया सब के सब एकबारगी बुनकर-जुलाहा बन गए। खादी का सूत राष्ट्रीयता का प्रतीक बन गया। यह मेहनत की संस्कृति का पुनर्निर्माण था, जिस पर मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन ने जोर दिया लेकिन इसी वक्त खिलाफत आंदोलन के चक्कर में पड़ना गांधी और उससे अधिक देश के लिए धातक सिद्ध हुआ। कई दूसरे मुद्दों पर भी कांग्रेस के भीतर मतभेद थे। नतीजतन 1923 में मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास और एनी बेसेंट कांग्रेस से टूट कर स्वराज पार्टी बना लिए, लेकिन फिर सब वापस आ गए।

1929 में कांग्रेस के अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू बनाये गये। तब तक कांग्रेस 40 की हो चुकी थी। वर्ष 1930 को 26 जनवरी के दिन कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज के लक्ष्य को अपना लिया और औपनिवेशिक सत्ता के होते स्वशासन की जगह पूरी आजादी कांग्रेस का लक्ष्य हो गया। 1934 में कांग्रेस के अंदर ही युवा समाजवादियों का एक मंच विकसित हो गया। 1938 आते-आते कांग्रेस के भीतर उस तरह की खींच-तान एक दफा फिर प्रारंभ हो गया, जैसी 1906 में नरम और गरम के बीच हुई थी। 1939 में दक्षिणपंथियों को वामपंथियों से तगड़ी सिकस्त मिली। यह लड़ाई सुभाष बोस और पट्टाभि सीतारमैय्या के बीच में हुई थी। सीतारमैय्या को गांधी का खुला समर्थन था। इस लड़ाई के बाद क्या हुआ, सब जानते हैं। गांधी कांग्रेस के मेंबर भी नहीं थे, लेकिन कांग्रेस में उनकी ही चलती थी। सुभाष चंद्र बोस चुनाव जीत कर भी कांग्रेस छोड़ने के लिए मजबूर हो गए। उस समय ऐसा लगा कि सचमुच गांधी, का झुकाव न केवल सत्ता पक्ष के प्रति है अपितु पूंजीपरस्थों के प्रति भी उनका साफ्टकॉरनर है।

कांग्रेस के आरंभिक इतिहास के दो-तीन तथ्यों पर हमें ध्यान देना चाहिए। 1920 से पूर्व कांग्रेस के कद्दावर नेता तिलक थे। वे जीते या हारें और उनके विचार चाहे जो हों, कांग्रेस का मतलब तिलक था। 1920 से कांग्रेस गांधी की हो गयी और वह तब तक रही, जब तक नेहरू प्रधानमंत्री नहीं हो गए। नेहरू के प्रधानमंत्री होने के बाद कांग्रेस का मतलब था नेहरू। जो नेहरू के साथ नहीं था, वह कांग्रेस में भी नहीं टिक सका। फिर कांग्रेस इंदिरा गांधी की हो गयी। दो बार इंदिरा को कांग्रेस से लगभग बहिष्कृत कर दिया गया। पहली दफा जुलाई 1970 में, जब उनके राष्ट्रपति उम्मीदवार के प्रस्ताव को उनकी ही पार्टी ने निरस्त कर दिया। इंदिरा जी ने जगजीवन राम का प्रस्ताव किया था लकिन सिंडिकेट ने नीलम संजीव रेड्डी को उम्मीदवार बना दिया। दूसरी दफा 1978-79 में देवराज अर्स के नेतृत्व में कांग्रेस दो फाड़ हो गयी। इन दोनों बार कांग्रेस कमजोर स्थिति में थी। 1978-79 में तो कांग्रेस सत्ता में भी नहीं थी। इंदिरा गांधी मुकद्दमे, गिरफ्तारी और संसद की सदस्यता गंवाने जैसी कार्रवाइयों से परेशान थीं, लेकिन कांग्रेस वहां रही, जहां इंदिरा ले गयीं।

1990 के दशक से लेकर अब तक पर नजर डालें तो मई 1991 में राजीव गांधी की हत्या हो चुकी थी। चुनाव के बाद पामूला पति नरसिंह राव कांग्रेस आलाकमान और प्रधानमंत्री थे। इनके नेतृत्व में आर्थिक क्षेत्र में नेहरू युगीन मिश्रित व्यवस्था की सोच को हटा कर उदारवादी नीतियां अपनाई गई। साल भर बाद अयोध्या में विवादित मस्जिद के ढांचे को हिंदूवादी ताकतों ने ढहवा दिया। अब कांग्रेस की ताकत भाजपा की तरह जाने लगी थी। कहा जाता है, प्रधानमंत्री राव उस रोज दिन में तब तक सोते रहे, जब तक मस्जिद ध्वस्त नहीं कर दी गई। इन सब के कारण कांग्रेस कमजोर होती गयी। 1991 तक 244 सीटें लाने वाली कांग्रेस 1996 और 1998 में 140 और 141 पर सिमट गयी।

ऐसे में एक बार फिर एक करिश्माई नेता की बात उठी और लौट कर लोग एक बार फिर उस पुराने घराने के पास आये। सोनिया से राजीव की मौत के बाद ही कांग्रेस की कमान संभालने का आग्रह किया गया था, लेकिन उन्होंने मजबूती से मना कर दिया था। एक बार फिर सोनिया से आग्रह होने लगा। इस बार वह तैयार हो गयीं। सोनिया ने कोई सत्ता नहीं हासिल की, कांटों का ताज संभाला। कांग्रेस निष्प्राण थी। लोग उसकी आखिरी सासें गिन रहे थे। राजनीतिक विश्लेषक कांग्रेस के मरने की भविष्यवाणियां कर रहे थे। एक मृतप्राय पार्टी का नेतृत्व उन्होंने अपने हाथ में लिया। 1999 के लोकसभा चुनाव में तो पारा और नीचे उतर गया, जब कांग्रेस को सिर्फ 114 सीटें मिली। सोनिया के नेतृत्व में यह पहला चुनाव था लेकिन सोनिया ने सधे कदमों से अपनी राजनीति कायम रखी। उन्होंने क्षेत्रीय दलों और वामपक्ष से कांग्रेस का एक समन्वय बनाया। 2004 में सोनिया के समन्वय का थोड़ा कमाल दिखा। सीटें तो भाजपा से केवल सात ही अधिक थीं (145 सीटें कांग्रेस की थीं और 138 भाजपा की), लेकिन तालमेल और कूटनीति के तहत अटल बिहारी वाजपेयी सरकार को हार का सामना करना पड़ा।

2009 में कांग्रेस 206 और भाजपा 116 पर सिमट गयी। सात सीटों का फासला बढ़ कर 90 का हो गया। कांग्रेस को और आगे बढ़ना था लेकिन अचानक वह फिसल गयी। उसे नए विचारों और खून की जरूरत थी। उस पर दलाल हावी होने लगे। दूसरी बात यह है कि जब 2009 में बिना वामपंथियों के कांग्रेस ने सफलता हासिल की तो कांग्रेस को घमंड भी हो गया और उसे लगने लगा कि वह बिना वामपंथ के देश की सत्ता चला सकती है। इस बीच कांग्रेस की नीति जनविरोधी होती गयी। परमाणु दायित्व विधेयक पर कांग्रेस ने अमेरिकी भक्ति दिखाई। साथ ही बाहरी पूंजी का समर्थन किया। यही कांग्रेस के लिए खतरनाक हो गया। दूसरी ओर कांग्रेस चौतरफा सुस्त होती गयी और भाजपा ने गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी को केंद्रीय कमान सौंप दी। यह एक प्रयोग था, जो पर्दे के पीछे से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कर रहा था। दो कदम आगे बढ़ने के लिए एक कदम पीछे चलने की राजनीति। अपनी रणनीति के मामले में मोदी ने जाने-अनजाने 1970-71 के इंदिरा गांधी की नकल की, फिर अपनी ही पार्टी के उस कल्याण सिंह का भी अनुसरण किया, जिसे अटल बिहारी ने घर बैठा दिया था। नतीजा हुआ 2014 में मोदी ने आश्चर्यजनक रूप से दिल्ली की सत्ता हासिल कर ली। भाजपा का पूर्ण बहुमत के साथ आना केवल कांग्रेस की नाकामी का नतीजा ही नहीं है अपितु वाम चिंतन की भी भयानक हार थी, जो देश में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा पर लगातार काम कर रहे थे।

कांग्रेस 206 से अचानक 44 पर आ गयी। कांग्रेस इस वक्त कुछ गरूर में चली गयी। राहुल गांधी को नेता के रूप में खड़ा किया गया। उन्होंने अपने इर्द-गिर्द जो टीम बनाई, वह राजसी किस्म की थी। अंग्रेजीदां, चिकने-चुपड़े चेहरे और खानदानी पृष्ठभूमि। ज्योतिरादित्य सिंधिया, कमलनाथ, दिग्विजय सिंह, गुलाम नबी आजाद, कपिल सिब्बल, सचिन पायलट, जितिन प्रसाद जैसे चेहरे कांग्रेस के लिए भार के सिवा कुछ नहीं थे लेकिन उन्हें कांग्रेस की मुख्यधारा और प्रथम पंक्ति का नेता बनाया गया। इसमें से कोई भी किसान, मजदूर, छोटे व्यापारी और जमीनी नेता नहीं थे। इसमें ज्योतिरादित्य और जितिन तो अलग हो चुके और सचिन भाजपा में जाने को तैयार बैठे हैं।

हम यह कहने की स्थिति में हैं कि राजस्थान में गहलोत, कर्नाटक में सिद्धारमैय्या या छत्तीसगढ़ में बघेल जैसे नेता उन सब के मुकाबले कहीं ज्यादा मजबूत थे लेकिन उन्हें केन्द्रीय टीम में नहीं रखा गया। ज्योतिरादित्य, जितिन और सचिन के उदाहरण कुछ और संकेत करते हैं। राजनीति में सत्ता हासिल करना उद्देश्य अवश्य होता है, लेकिन वह तो पावर है, ताकत है, इसलिए उसे हासिल करना है। असली मकसद तो वे उसूल और विचार या कार्यक्रम हैं, उसको पूरा करने के लिए सत्ता चाहिए। ये कैसे कांग्रेसी हैं, जो सत्ता के लिए कांग्रेस से सीधे भाजपा में मिल रहे हैं। इसका मतलब उनकी कोई विचारधारा नहीं थी। पार्टी छोड़ना कोई गलत नहीं है। लोकतंत्र में इस प्रवृति का न होना ही गलत है। पार्टी की स्थिति से रंज हो कर पहले भी नेताओं ने पार्टी छोड़ी है। सुभाष चंद्र बोस अध्यक्ष पद का चुनाव भारी बहुमत से जीत कर भी पार्टी छोड़ने के लिए मजबूर हुए थे लेकिन वह हिन्दू महासभा में नहीं चले गए। 1948 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के लोगों ने इकटठे पार्टी छोड़ी। उन लोगों ने सोशलिस्ट पार्टी बनाई। चरण सिंह, चंद्रशेखर जैसे जाने कितने लोगों ने कांग्रेस छोड़ी लेकिन उनमें से शायद ही कोई जनसंघ की सदस्यता ग्रहण की। समान विचारों के दलों में उनका जाना हुआ, अथवा उन्होंने अपनी पार्टी बनाई। शरद पवार, ममता बनर्जी, जगनमोहन रेडडी ने भी पार्टी छोड़ी, लेकिन उन्होंने राष्ट्रवादी कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस और वाईएसआर कांग्रेस बनाई, वे भाजपा में नहीं गये। ज्योतिरादित्य, गौरव भल्लभ और जितिन भाजपा में गए हैं। इन्होंने पार्टी तो छोड़ी ही है, विचार का भी परित्याग किया है। इन दिनों राहुल गांधी भी कभी-कभार ब्राह्मण बनने की कोशिश करते दिखते हैं लेकिन उन्हें यह सोच लेना चाहिए कि ब्राह्मण बनने से उन्हें वोट नहीं मिलने वाला है। इसलिए वे जहां हैं वहीं रहें और संघर्ष करें।

कांग्रेस के भविष्य का अनुमान यहां जरूरी है। कांग्रेस खत्म नहीं होगी। क्या रूप होगा, कहा नहीं जा सकता है लेकिन परिस्थितियां कांग्रेस को आत्म बदलाव के लिए मजबूर कर देंगी। यह प्र ति का नियम है। उसका रूप बदल जाये,नाम बदल जाये, लेकिन एक विचार जो कांग्रेस के रूप में है, मध्य मार्ग विचार, वह कांग्रेस की पूंजी है। इसी के इर्द-गिर्द एक बार फिर राजनीतिक जुटान होगा। जिस तरह कांग्रेस की नाकामियों का लाभ भाजपा को मिला, उसी तरह भाजपा की नाकामियों का लाभ अंतत: कांग्रेस को मिलेगा, क्योंकि कोई अन्य राष्ट्रीय पार्टी दिखाई नहीं देती, जो कांग्रेस की तुलना में खड़ी हो। इस बीच कांग्रेस को लाभ लेने लायक अपनी जमीन बना लेनी चाहिए। कांग्रेस को रजवाड़ी और सामंती ताकतों के मुकाबले सभी तबकों के युवाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए। महिलाओं की समुचित भागीदारी सुनिश्चित करे, ताकि आधी आबादी को वह विश्वास में ले सके। दलितों, आदिवासियों और अन्य पिछड़े तबकों की नई पीढ़ी एक नयी पार्टी की तलाश में है। कांग्रेस उस तलाश को पूरी कर सकती है।

भाजपा नेता कांग्रेस की कम सीटों के लिए व्यंग्य करने के समय भूल जाते हैं कि 1984 में उसके पास बस 2 सीटें थी। आज वह पूर्ण बहुमत में है। कांग्रेस के पास तो अभी 50 से अधिक सांसद हैं। कांग्रेस के पास खोने के लिए कुछ नहीं है, पाने के लिए पूरी सत्ता है। भविष्य उसका हो सकता है, यदि वह चाहे तो। कट्टरपंथी दक्षिणपंथ और क्रूड पूंजीवाद के खिलाफ कांग्रेस को एक मोर्चा बनाना चाहिए और उसमें वामपंथियों को जब तक शामिल नहीं किया जाएगा तब तक कांग्रेस मजबूत नहीं होगी। इसके लिए कांग्रेस को थोड़ा त्याग करना होगा।

नववर्ष विक्रमी संवत 2081, मंगलवार 9 अप्रैल 2024 से शुरू

सम्वत का राजा मंगल और मंत्री शनि

अश्विनी कुमार शर्मा शास्त्री

भारतीय संस्कृति और भारतीय ज्योतिष बहुत ही विशाल है और यह अपने अन्दर बहु प्रकार की अकूत सम्पदा समेटे हुये है जिसके आधार पर भारतीय पर्व और त्योहार मनाये जाते हैं। यह परम्परा भी सदियों से चली आ रही है। इस परम्परा का सभी भारतीय बड़े सम्मान,श्रद्धा और विश्वास से पालन करते हैं क्योंकि भारतवर्ष धार्मिक दृष्टि से भी सर्वोपरि माना गया है। यह भूमि देवभूमि है जहाँ पर अनेक अवतार हुए हैं।

'विश्व में अनेकों प्रकार के नववर्ष मनाये जाते हैं जिनके शुरू होने पर किसी की भी प्रकार का मौसमी परिवर्तन नहीं होता है जबकि भारतीय नववर्ष विक्रमी सम्वत पर मौसम परिवर्तन होता है और ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है।

'चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष विक्रमी सम्वत शुरु होता है जो इस बार 9 अप्रैल 2024 दिन मंगलवार को है। सम्वत का राजा मंगल और मंत्री शनि हैं जो परस्पर शत्रु हैं। वर्ष के शेष पदाधिकारी सस्येश (चौमासा फसलों के स्वामी) मंगल, धन्येश(अनाज के स्वामी) सूर्य, मेघेश(वर्षा के स्वामी) शुक्र, रसेश (फूल एवं रसों के स्वामी) गुरु, नीरसेश (धातुओं के स्वामी) मंगल, फलेश (फलों के स्वामी) शुक्र, धनेश (कोशपति, खजाने के स्वामी) चन्द्र,दुर्गेश (सेनापति) शुक्र हैं।

रोहिणी का वास 'तट' पर होगा। 'सम्वत 'काल' नाम से होगा। सम्पूर्ण वर्ष संकल्पादि में काल नामक सम्वत का प्रयोग होगा।

संवत का वास 'धोबी' के घर में होगा और इसका वाहन गीदड़ होगा।

नवमेघों में 'वरुण' नामक मेघ और चतुर्मेघों में 'आवर्त' नामक मेघ है।

इस वर्ष **सोमवती अमावस्याएँ** (2024 में ही)

भाद्रपद वदि अमावस्या–2 सितम्बर,
पौष वदि अमावस्या –30 दिसम्बर,
भौमवती अमावस्या मात्र एक ही है।
भाद्रपद वदि अमावस्या
3 सितम्बर 2024,
शनैश्चरी अमावस'
चैत्र वदि अमावस्या:
29 मार्च 2025,

इस वर्ष पृथ्वी पर चार ग्रहण लगेगें पर भारत में कोई भी ग्रहण दिखाइ नहीं देगा।

श्राद्ध 17 सितम्बर 2024 से 2अक्तूबर 2024 तक रहेंगें।

कार्तिक मास 17 अक्तूबर से 15 नवंबर 2024 तक रहेगा।

शारदीय नवरात्र 3 अक्तूबर से 11 अक्तूबर तक रहेंगें।

धनु संक्रांति का महीना 15 दिसम्बर 2024 से 14 जनवरी 2025 तक रहेगा।

होलाष्टक 7 मार्च 2025 से 14 मार्च 2025 तक रहेंगे।

शनि का गोचर :–

17 जनवरी 2023 से शनि स्वराशि कुम्भ में ही चल रहा है। 29 जून 2024 को वक्री होंगें और 15 नवम्बर 2024 को मार्गी होंगे। 29 मार्च 2025 को सम्वत के सम्पूर्ण होने पर शनैश्चरी अमावस के दिन मीन राशि में प्रवेश करेंगे।

गुरु का गोचर :–

देवगुरु बृहस्पति मेष में चल रहे हैं और 1 मई 2024 को वृष राशि में प्रवेश करेंगे। 9 अक्तूबर 2024 को वक्री होंगें और 4 फरवरी 2025 को मार्गी होंगें।

राहू व केतू क्रमश: मीन और कन्या राशि में ही रहेंगे।

गुरु अस्त :–

7 मई 2024 को अस्त होंगें और 31 मई 2024 को उदय होंगें।

शुक्र अस्त :–

28 अप्रैल 2024 को अस्त होंगें और 5 जुलाई 2024 को उदय होंगें।

पुन: 20 मार्च 2025 को अस्त होकर 25 मार्च 2025 को उदय होंगें।

गुरु और शुक्र के अस्त होने से तीन दिन पहले तक वार्धक्य दोष और उदय होने के तीन दिन बाद तक बाल्यत्व दोष रहता है जो सभी प्रकार के शुभ कार्यों हेतु वर्जित माना गया है।

आश्विन नवरात्रारंभ: – 3 अक्तूबर से शुरू। कलौ चण्डौ विनायकौ अर्थात कलियुग में चण्डी (माँ दुर्गा) और विनायक (गणपति) जी की पूजा अर्चना से ही मनोकामनाएं पूर्ण होतीं हैं। प्रत्येक शुभकार्य तो गणपति जी की पूजा से ही शुरू होता है और वर्षभर में गणपति जी को समर्पित गणेश चतुर्थी के व्रत रखे जाते हैं जबकि मां दुर्गा की पूजा के लिए 2 बार नवरात्र (नौ दिन) आते हैं। वसन्त नवरात्र अर्थात चैत्र नवरात्र और शारदीय नवरात्र अर्थात आश्विन नवरात्र।

विशेष साधकों के लिए वर्ष में 2 बार 'गुप्त नवरात्र भी आते' हैं। जो इस बार 6 जुलाई 2024 से 15 जुलाई 2024 तक और 30 जनवरी 2025 से 6 फरवरी 2025 तक रहेंगें।

चैत्र नवरात्र शुरू :–

नववर्ष का शुभारंभ चैत्र नवरात्र से मंगलवार 9 अप्रैल 2024 से शुरू होगा। इस दिन सुबह गणपति पूजन, नवग्रह पूजन, कलश स्थापना और जौ बीजना शुभ कारक है। तत्पश्चात दुर्गा पाठ, दुर्गा सप्तशती, दुर्गा स्तुति, दुर्गा चालीसा, दुर्गा के 32 नाम, दुर्गा के 108 नाम और सप्तश्लोकी दुर्गा का पाठ अपनी सुविधानुसार किया जा सकता है। इसके लिए दिन या रात की पाबंदी नहीं होती।

पहला नवरात्र 9 अप्रैल, दूसरा 10 को, तीसरा 11 को, चौथा 12 को, पांचवाँ 13 को, छठा 14 को, सातवां 15 को, अष्टमी 16 को और श्री राम नवमी 17 को होगी।

विशेष: प्रयागराज कुम्भ महापर्व

इस वर्ष माघ कृष्ण प्रतिपदा 14 जनवरी 2025 से माघ शुक्ल पूर्णिमा 12 फरवरी 2025 तक प्रयागराज (इलाहाबाद) कुम्भ महापर्व का सुयोग रहेगा।

13 दिनों का पक्ष: –

23 जून 2024 से 5 जुलाई 2024 तक 13 दिनों का पक्ष रहेगा जो सभी प्रकार के शुभ कार्यों हेतु पूर्णतया वर्जित है।

नववर्ष विक्रमी संवत 2081 सभी के लिए मंगलमय हो।

अश्विनी कुमार शर्मा शास्त्री
ज्योतिषाचार्य (अमृतसर)
चलभाष: – 9877975572, 98883 90072, 9417690072

मतदाता सूची में नाम की जांच करने के लिए डाउनलोड करें वोटर हेल्पलाईन ऐप

शिमला/शैल। मुख्य निर्वाचन अधिकारी मनीष गर्ग ने बताया कि कानून में नवीनतम संशोधन के अनुसार, भारत निर्वाचन आयोग ने नए मतदाताओं के लिए रजिस्ट्रेशन के नए दिशा–निर्देश जारी किए हैं, जिसके अनुसार 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके नए वोटर मतदाता सूची में अपना नाम अब जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्तूबर की पहली तारीख को भी दर्ज करवा सकते हैं। पूर्व में 01 जनवरी को ही मतदाताओं का नाम दर्ज किया जाता था।

उन्होंने कहा कि इन संशोधनों के दृष्टिगत 1 अप्रैल, 2024 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके युवा मतदाता हिमाचल प्रदेश में आगामी लोकसभा चुनावों में वोट डालने के लिए पंजीकरण करवा सकते हैं।

उन्होंने बताया कि नए मतदाता गूगल प्ले से वोटर हेल्पलाइन ऐप डाउनलोड करके भी मतदाता सूची में अपना नाम देख सकते हैं और नए मतदाता फार्म–6 भरकर अपना पंजीकरण करवा सकते हैं।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने युवाओं को जागरूक करने की आवश्यकता पर पर बल देते हुए कहा कि यह धारणा गलत है कि यदि उन्होंने पंचायत चुनावों के लिए मतदान किया है तो वे लोकसभा या विधानसभा चुनावों में मतदान करने के लिए पात्र हैं, जो सही नहीं है। ऐसे नए मतदाताओं को अपना फोटो पहचान पत्र प्राप्त करने के

लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित फार्म–6 भरकर मतदाता सूची में स्वयं को पंजीकृत करना होगा जबकि अप्रवासी मतदाताओं को मतदाता सेवा पोर्टल https://voters.eci.gov.in पर यह सुविधा उपलब्ध होगी।

उन्होंने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग के मार्गदर्शन में, निर्वाचन विभाग हिमाचल प्रदेश युवाओं को मतदान करने के लिए प्रेरित कर रहा है। उन्होंने कहा कि दूरदर्शन और आकाशवाणी को मतदाता जागरूकता पर आधारित सोशल मीडिया का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जिले के शतायु मतदाताओं का संदेश भी सोशल मीडिया के माध्यम से दिया जाना चाहिए ताकि युवा मतदाता इससे प्रेरित हो सकें।

उन्होंने कहा कि नेहरू युवा केंद्र और स्वयं सहायता समूह मतदाता जागरूकता में एक अहम भूमिका निभा सकते है, ऐसे में मिशन मोड पर काम करने की आवश्कता है 414 पोलिंग स्टेशन जिनमें लोकसभा चुनाव–2019 में 70 प्रतिशत से कम मतदान दर्ज किया गया है और अन्य 08 निर्वाचन क्षेत्रें में जहां लोकसभा चुनाव–2019 में महिला मतदान कम रहा, इन क्षेत्रें में विशेष जगरूकता अभियान चलाया जाए।

चम्बा जिला में भूकंप प्रभावित क्षेत्र में कोई जनहानि नहीं

शिमला/शैल। भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र द्वारा 4 अप्रैल, 2024 को रात्रि 9.34 बजे 5.3 तीव्रता के भूकंप की सूचना प्रदान की गई थी। इस भूकंप की भौगोलिक स्थिति 33.09 अक्षांश और 76.59 देशान्तर एवं 10 किलोमीटर की गहराई पर थी। हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के विश्लेषण के अनुसार भूकंप के चिन्हित केंद्र से जिला चम्बा की तहसील पांगी की साच, सेचू, शून हिलुत्वान और कुमार परमार पंचायतें प्रभावित हुई।

मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना ने बताया कि प्रदेश के आपातकालीन संचालन केंद्र द्वारा त्वरित कार्यवाही सुनिश्चित की गई। जीआईएस की सहायता से भूकंप के केंद्र के आसपास के क्षेत्रों की पहचान की गई। उन्होंने बताया कि जिला चम्बा के उपायुक्त और क्षेत्रीय आयुक्त पांगी से सम्पर्क कर स्थिति का आकलन किया गया और जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण चम्बा और आवासीय आयुक्त पांगी से स्थिति के बारे में जानकारी एकत्रित की गई। उन्होंने बताया कि स्थानीय प्रशासन क्षेत्र के फील्ड स्टाफ, पटवारी साच, पुलिस चौकी पुर्थी और सम्भावित क्षेत्रों के चुने हुए प्रतिनिधियों से निरन्तर सम्पर्क में है। साच, सेचू, शून हिलुत्वान और कुमार परमार पंचायतें भूकंप से प्रभावित हैं, परन्तु भूकंप के कारण किसी प्रकार की जानमाल की क्षति की कोई सूचना नहीं है। उन्होंने बताया कि स्थानीय प्रशासन और कार्यकारी दण्डाधिकारी कानूनगो, चिकित्सकों और पुलिस के दल को खोज और बचाव के लिए प्रभावित पंचायतों में भेजा गया। जानकारी के अनुसार अब तक जनहानि की सूचना नहीं है और स्थिति सामान्य है। सभी प्रभावित ग्राम पंचायतों तक बचाव दल पहुंच गए हैं। क्षेत्र के कुछ मकानों में आंशिक क्षति हुई है, जिसकी जांच कर विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जा रही है और प्रावधानों के अनुसार प्रभावित परिवारों को राहत प्रदान की जाएगी।

उन्होंने कहा कि राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण नियमित रूप से लोगों को भूकंप आपदा के कारण होने वाली जानमाल की क्षति को कम करने के लिए जागरूक कर रहा है।

नसों की सुजन को नजरअन्दाज करना हानिकारक हो सकता है: डॉ.रावुल जिन्दल

शिमला/शैल। जांघों व पिंडलियो में नीले–लाल व बेंगनी रंग की नसों का उभरना, भारीपन व अकडन जैसे लक्ष्ण दिखें तो इसे

नजरअंदाज न करें। यह नसों के फूलने की बीमारी है। यह बात जाने माने जाने माने वेस्कूलर सर्जन डॉ. रावुल जिंदल ने शिमला में आयोजित एक पत्रकारवार्ता में कही, जो कि वेरीकॉज वेनस यानि नसों के फूलने की बीमारी एवं इसके उपचार में आए तकनीकी बदलाव संबंधी जागरूक करने के लिए शहर में पहुंचे थे।

फोर्टिस अस्पताल में वेस्कूलर सर्जरी के डायरेक्टर डॉ. रावुल जिंदल ने कहा कि नसों की सूजन को नजरअंदाज करना हानिकारक हो सकता है। इस तरह के लक्षण नजर आने पर इसका तुरंत उपचार कराना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कई बार पीड़ित मरीज द्वारा लगातार खुशकी करने से अल्सर भी हो सकता है। बीमारी के कारण पैर में तेज दर्द शुरू हो जाता है। मरीज अपना पैर हिला भी नहीं सकता। इस बीमारी का प्रमुख कारण लंबे समय तक खड़े रहना माना जाता है। उन्होंने कहा कि पहले बुजुर्गों व महिलाओं में ऐसी बीमारी के ज्यादा लक्ष्ण देखने को मिलते थे, परंतु अब खराब जीवनशैली के कारण युवा भी इस बीमारी की चपेट में आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं में इस बीमारी के फैलने का कारण शारीरिक व्यायाम न करना तथा एक ही जगह पर घंटों बैठे रहना है।

उन्होंने बताया कि ऐसी बीमारी का इलाज मात्र सर्जरी है तथा यदि पीड़ित व्यक्ति समय पर ऐसे अस्पताल पहुंचता है, जहां माहिर डाक्टरों की टीम व उत्तम तकनीक मौजूद हों, तो पीड़ित जल्द स्वस्थ हो सकता है। डॉ जिंदल ने बताया कि लेजर एब्लेशन का प्रयोग गंभीर वैरिकाज़ नसों के इलाज और फोम स्क्लेरोथेरेपी से उभरी हुई वैरिकाज़ नसों और स्पाइडर नसों का इलाज किया जाता है।

वैरिकाज़ नसों के उपचार में नवीनतम तकनीकी प्रगति के बारे में चर्चा करते हुए हुए डॉ जिंदल ने कहा कि आधुनिक एडवांस्ड ट्रीटमेंट विकल्प कम दर्दनाक हैं और जल्दी ठीक होने को सुनिश्चित करते हैं। प्रक्रिया में लगभग 30 मिनट लगते हैं और रोगी प्रक्रिया के एक घंटे के भीतर घर जा सकता है। इसके अलावा, रोगी को काफी कम दवाओं की जरूरत पड़ती है और उसे सिर्फ अपनी कुछ अतिरिक्त देखभाल करनी पड़ती है। डा. रावुल जिंदल व उनकी टीम आगामी 6 अप्रैल को सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक हरितारा अस्पताल एंड पेडिट्रिक सेंटर संजौली शिमला में एक चिकित्सा शिविर आयोजित करेगी।

भुट्टो को कुट्टो, भाजपा चुनाव आयोग से करेगी शिकायत:बिंदल

शिमला। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजीव बिंदल ने कहा कि हिमाचल प्रदेश कांग्रेस सरकार के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू इन दिनों बहुत बौखलाहट और घबराहट में होते हुए कुछ भी बोल रहे हैं। सुक्खू ने कांग्रेस

पार्टी के विधायक रहे और वर्तमान में भाजपा के प्रत्याशी देवेन्द्र भूट्टो को कुट्टों का नारा लगाकर हिमाचल प्रदेश की संस्कृति को तार-तार किया है।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा इसकी शिकायत करने चुनाव आयोग के पास जा रही हैं। शांतिपूर्वक चुनाव हिमाचल प्रदेश में संपन्न ना हो इस दृष्टि से मुख्यमंत्री का यह ब्यान हैं। किस तरह से जनमानस को उकसाया जा सकता है। किस तरह वातावरण को खराब किया जा सकता है और उस खराब वातावरण के अंदर लोगों को वोट के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस की वर्तमान सरकार जिंस बुरी तरह से फेल हुई है। एक भी उपलब्धि ले करके यह जनता में नहीं जा सकते। डेढ़ साल के अंदर प्रदेश के एक भी व्यक्ति का काम इन्होंने नहीं किया। नौकरियां देने वाला संस्थान बंद कर दिया। डेढ़ साल में एक भी व्यक्ति को नौकरी नहीं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने 12-14 कैबिनेट रैंक के बंदे जरूर बनाएं। परंतु सरकारी नौकरी के नाम पर एक भी नौकरी नहीं है।

डॉ. राजीव बिंदल ने कहा कि ऐसी सरकार ना भूतो न भविष्यति, ना पहले कभी हुई ना आगे कभी होगी। इस वर्तमान सरकार ने प्रदेश की जनता को ठगा और इनके पास जब बोलने को कुछ नहीं है तो यह सरकार दादागिरी के ऊपर उतारू हो गई। उन्होंने कहा कि इसलिए हिमाचल की जनता इस सरकार को रिजेक्ट करने जा रही हैं। भ्रष्टाचार के आकंठ में डूबी कांग्रेस पार्टी, भ्रष्टाचार के आकंठ में डूबी वर्तमान प्रदेश की सरकार दूसरों पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाती हैं। कांग्रेस सरकार ने अपने कार्यकाल का डेढ़ साल केवल और केवल भाजपा को गाली देने में बिता दिया। संस्थान बंद करने के अलावा इस सरकार ने कुछ नहीं किया। 1500 संस्थान बंद कर दिए, 20 हजार करोड़ रूपये का कर्जा ले लिया। सड़कें बंद, डवलपमेंट बंद, पानी के काम बंद, स्कूलों और भवनों के काम बंद, अस्पताल बंद।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि यह सरकार जनता के बीच नहीं जा सकती यह साफ दिखाई दे रहा हैं। इस सरकार की बौखलाहट का यह नतीजा है। डॉ. राजीव बिंदल ने कहा कि हम जनता की अदालत में भी इसको लड़ेंगे और न्यायालय के अंदर भी इसको लड़ेंगे।

यह सुनना शर्मनाक है कि कांग्रेस पार्टी पूछ रही है, कश्मीर से क्या वास्ता:अमित शाह

शिमला/शैल। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की कश्मीर

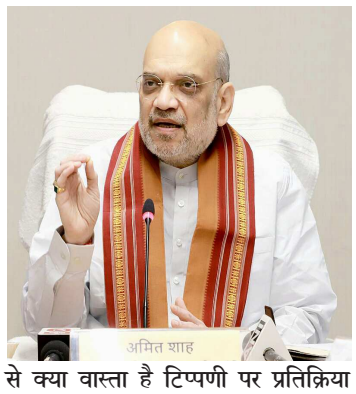

से क्या वास्ता है टिप्पणी पर प्रतिक्रिया दी है। अमित शाह ने कहा, यह सुनना शर्मनाक है कि कांग्रेस पार्टी पूछ रही है, कश्मीर से क्या वास्ता है। मैं कांग्रेस पार्टी को याद दिलाना चाहूंगा कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, और प्रत्येक राज्य और नागरिक का जम्मू-कश्मीर पर अधिकार है, जैसे जम्मू-कश्मीर के लोगों का शेष भारत पर अधिकार है। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए शाह ने कहा कि कांग्रेस को यह नहीं पता कि कश्मीर में शांति और सुरक्षा के लिए राजस्थान के कई वीर सपूतों ने अपने प्राणों की आहुति दी है। शाह ने आगे कहा, लेकिन यह केवल कांग्रेस नेताओं की गलती नहीं है। भारत के विचार को न समझ पाने के लिए ज्यादातर कांग्रेस पार्टी की इटालियन संस्कृति दोषी है। इस तरह के ब्यानों से हर देशभक्त नागरिक को ठेस पहुंचती है जो इसकी परवाह करता है। देश की एकता और अखंडता के लिए जनता निश्चित तौर पर कांग्रेस को जवाब देगी और आपकी जानकारी के लिए बता दें कि मोदी सरकार ने धारा 371 को नहीं बल्कि धारा 370 को हटाया है, लेकिन कांग्रेस से यही अपेक्षा है। कांग्रेस द्वारा की गई ऐसी गलतियों ने देश को दशकों से परेशान किया है। हाल ही में, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने जम्मू-कश्मीर को लेकर बयान देते हुए पूछा था कि भारतीय जनता पार्टी और उसके नेता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राजस्थान में जम्मू-कश्मीर की बात क्यों कर रहे हैं। उन्होंने यह भी पूछा, कश्मीर से क्या वास्ता है?

भाजपा महामंत्री की बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि केंद्रीय मंत्री अमित शाह बिल्कुल ठीक कह रहे हैं, कांग्रेस की मानसिकता क्या है वह जनता जानती है। अगर जम्मू कश्मीर मे समस्या का समाधान हुआ है तो वह भाजपा की केंद्र शासित सरकार की वजह से हुआ है।

हिमाचल के विधान सभा के घोषणा पत्र की तरह झूठ का पुलिंदा है कांग्रेस का घोषणा:जयराम ठाकुर

शिमला/शैल। नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा कि लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस द्वारा जारी किया गया घोषणा पत्र सिर्फ झूठ का

एक पुलिंदा है। हिमाचल प्रदेश के विधानसभा चुनाव के समय भी कांग्रेस पार्टी द्वारा 10 गारंटियां देने के साथ साथ एक घोषणा पत्र भी जारी किया गया था। इस घोषणापत्र में कांग्रेस द्वारा बड़ी बड़ी बातें की गई थी। लेकिन चुनाव जीतने के बाद जब हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी तो मुख्यमंत्री विधानसभा के अंदर ही अपने पार्टी के द्वारा दी गई गारंटियों से साफ़ मुकर गए। उन्होंने कहा कि सत्ता में आने के बाद कांग्रेस के नेताओं ने एक बार भी घोषणा पत्र को पलट कर नहीं देखा है।

जयराम ठाकुर ने कहा कि मुख्यमंत्री अपने पार्टी के विधायक रहे नेताओं के साथ छोड़ जाने से पूरी तरह से हताश हो गए हैं और वह हताशा में इधर उधर की बातेंकर रहे हैं। उन्हें कुछ भी कहने से पहले ध्यान रखना चाहिए कि वह अभी भी हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। किसी भी सम्माननीय व्यक्ति के ऊपर टिप्पणी करने और अनर्गल आरोप नहीं लगाने चाहिए क्योंकि ऐसे आरोप ज्यादा देर तक टिक नहीं सकते ऐसे में उनकी स्वयं की प्रतिष्ठा ही धूमिल होती है। उनके द्वारा किये गये अपमान के कारण ही इक चुने हुए जन प्रतिनिधियों को अपनी पार्टी छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि कांग्रेस के घोषणा पत्र को लेकर कांग्रेस ही गंभीर नहीं है। किसी पार्टी द्वारा घोषणा पत्र में किए गए वादों को पूरा करने का ब्लू प्रिंट भी होता है। लेकिन कांग्रेस के घोषणा पत्र में न्यूयॉर्क की नदी की तस्वीरें लगाई हैं। हिमाचल प्रदेश के घोषणापत्र की तरह लोकसभा चुनाव के लिए बनाया गया कांग्रेस के घोषणापत्र में हर वर्ग को ठगने की कोशिश की गई है। इस बार भी देश के लोग कांग्रेस के इस झांसे में नहीं आएंगे। हाल ही में हुए विधान सभा चुनावों की तरह देशवासी कांग्रेस को पूरी तरह नकार देंगे।

जयराम ठाकुर ने कहा कि कांग्रेस ने नौकरियां देने का वादा किया था लेकिन यह सरकार भर्तियां रोक कर बैठी हुई है। नौकरियां देने वाले कर्मचारी चयन आयोग को बंद कर दिया है। सरकार पूरी कोशिश कर रही है कि सभी भर्तियों को कैंसिल कर दिया जाए। कांग्रेस सरकार की यह असलियत हैं। एक लाख नौकरी का वादा करके एक भी नौकरी न देना यह बताता है कि सरकार न प्रदेश के विकास लिए गंभीर हैं न युवाओं के भविष्य के लिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में हर व्यवस्था का बुरा हाल है। इस सरकार से हर कोई दुखी है और सरकार का नारा है दु:ख की सरकार।

कांग्रेस का घोषणा पत्र सिर्फ़ झूठे दावों-वादों का पुलिंदा: अनुराग ठाकुर

शिमला/शैल। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण और युवा एवं खेल मामलों के मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने अपने हमीरपुर संसदीय क्षेत्र के ऊना के बसदेहरा व सलोह में एससी मोर्चा के सम्मेलनों को संबोधित किया। इस दौरान अनुराग ठाकुर ने कांग्रेस के घोषणा पत्र व महिलाओं के प्रति कांग्रेसी नेताओं के अभद्र ब्यानों को दुर्भाग्यपूर्ण बताया।

अनुराग सिंह ठाकुर ने कहा भाजपा

जहां एक तरफ़ विकास की बात करती है तो वहीं कांग्रेस सदा ही देश को पीछे ले जाने की सोच रखती है। हाल ही में जारी कांग्रेस के घोषणा पत्र में देश को पीछे ले जाने का इनका एजेंडा फिर से देखने को मिला। की कांग्रेस है उसके पास न तो देश हित की नीतियां हैं और न ही देश के निर्माण का विजन इनके पास है। कांग्रेस के घोषणा पत्र में वही सोच झलकती है जो सोच आजादी के आंदोलन के समय मुस्लिम लीग में थी। कांग्रेस का घोषणा पत्र सिर्फ़ झूठे दावों-वादों का पुलिंदा मात्र है। कांग्रेस ने 60 सालों में देश को सिर्फ़ छला है और इसी वजह से अब जनता इनके बहकावों में नहीं आने वाली है। इनके पूरा का पूरा घोषणा पत्र उनके मौजूदा क्रियाकलापों के विपरीत है। महिला न्याय की बात करने वाली कांग्रेस के शीर्ष से लेकर गली के नेता आये दिन महिलाओं के बारे में कैसी अभद्र टिप्पणी कर रहे हैं ये किसी से छिपा नहीं है। कांग्रेस ने हमारी माननीय राष्ट्रपति जी से लेकर अन्य महिला सांसदों पर जो टिप्पणी करी वह उनकी महिला विरोधी सोच को दिखाता है ।

न्याय पत्र लाने वाली कांग्रेस ये क्यों नहीं बताती कि पिछले 7 दशक में देश के साथ सबसे ज्यादा अन्याय करने वाली कांग्रेस पार्टी ही है। इनके किए घोटाले, दिए अत्याचार, थोपे आपातकाल को देश आज भी नहीं भूला है। यह लोग भारत के टुकड़े करना चाहते हैं और इस घोषणा पत्र में मानसिकता दिखती है कि देश को पीछे कैसे ले जाना चाहते हैं। जैसे देश की निगाहों में कांग्रेस अपनी विश्वसनीयता खो चुकी है उसी तरह इनका घोषणा पत्र भी सिर्फ़ खोखली बातों का पुलिंदा है।

अनुराग ठाकुर ने कहा आज देश में कांग्रेस के नेता चुनाव लड़ने से डर रहे हैं। पहली बात तो कोई कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ने की इच्छा नहीं जता रहा दूसरे इनके कई नेताओं को जिन्हें टिकट मिल रही है वो वापस कर रहे हैं। क्योंकि इन्हें पता है कि आयेगा तो मोदी ही। आज देशभर में कांग्रेस का टिकट वापस करने की होड़ सी लग गई है। ये कांग्रेस पार्टी और इनके कुप्रबंधन को दर्शाता है। देश में प्रचंड बहुमत की सरकार बनाने के लिए जनता इस बार खुद चुनावी मैदान में है और विपक्ष मतदान से पहले ही हार मान चुका है।

उन्होने कहा कॉंग्रेस ने गरीबी हटाओ के बस नारे लगाए लेकिन जब एक गरीब माँ का बेटा देश का प्रधानमंत्री बना तो 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर निकल कर आए। 80 करोड़ गरीबों को नि:शुल्क राशन, 12 करोड़ शौचालय, 4 करोड़ गरीबों को घर, 10 करोड़ महिलाओं को उज्ज्वला कनेक्शन, 14 करोड़ से ज्यादा लोगों को नल से जल, 60 करोड़ गरीबों को 5 लाख तक का स्वास्थ्य का खर्च प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने दिया है।

हिमाचल भवन में रुकने की बजाये फाइव स्टार होटल में रुकने का राज बताएं सुक्खू: राजेंद्र राणा

शिमला/शैल। सुजानपुर से जीत की हैट्रिक जमाने वाले और अब

उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी राजेंद्र राणा ने कहा है कि व्यवस्था परिवर्तन का राग आए दिन अलापने वाले मुख्यमंत्री सुखविंदर सुक्खू से प्रदेश की जनता यह जानना चाहती है कि वह चंडीगढ़ के अपने आधिकारिक दौरे के दौरान हिमाचल भवन स्थित ब्ड सूट में रुकने की बजाय अपने सुरक्षा कर्मियों को दाएं बाएं करके रात को हमेशा फाइव स्टार होटल में क्यों रुकते थे और वहां पर क्या करते थे ? किसके साथ कौन सी डील फाइनल होती थी। कौन-कौन उन्हें मिलने आता था और सुरक्षा कर्मियों को भी उस होटल के आसपास क्यों नहीं फटकने दिया जाता था। राजेंद्र राणा ने कहा कि मुख्यमंत्री को प्रदेश की जनता को इस बात का राज बताने का साहस दिखाना चाहिए ।

सुजानपुर विधानसभा क्षेत्र में अपने दौरे के दौरान राजेंद्र राणा ने कहा कि सुखविंदर सुक्खू ने अपने 14 माह के कार्यकाल के दौरान प्रदेश के युवाओं को खून के आंसू रूलाए हैं। 14 महीने में रोजगार के दरवाजे बंद कर दिए गए। इंटरव्यू के रिजल्ट रोक दिए गए। राजेंद्र राणा ने कहा कि जब उन्होंने प्रदेश के युवाओं के हित में आवाज बुलंद की तो मुख्यमंत्री सुक्खू उन्हें जलील करने पर उतर आए। उन्होंने कहा कि इन चुनावों में युवा शक्ति अब अपने अपमान का बदला लेने वाली है और रोजगार के दरवाजे बंद करने वाली सुक्खू सरकार को अब युवा शक्ति बख्शने के मूड में नहीं है।

राजेंद्र राणा ने कहा कि कुटलेहड़ विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी देवेंद्र भुट्टो के बारे में मुख्यमंत्री ने जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल की है, वह हिमाचल की गौरवपूर्ण संस्कृति और शालीनता से तो मेल नहीं खाती और ऐसी भाषा प्रदेश की जनता पसंद नहीं करती।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाष: 0177-2805015, 94180-15015 फैक्स: 2805015

प्रतिभा–विक्रमादित्य सिंह को लेकर आये जयराम के ब्यान ने बदले राजनीतिक समीकरण

- जयराम के ब्यान से भाजपा की मुश्किलें बढ़ेगी
- सरकार गिराने के दावों पर भी आयेगा प्रश्न चिन्ह
- इस ब्यान से मण्डी में कांग्रेस की स्थिति होगी मजबूत

शिमला/शैल। नेता प्रतिपक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री ठाकुर जयराम ने मण्डी में एक पत्रकार वार्ता में खुलासा किया है कि प्रतिभा सिंह और विक्रमादित्य सिंह ने कांग्रेस के बागीयों को उकसाया और बाद में खुद पलट गये। जयराम

के अनुसार इन लोगों ने पहले तो मुख्यमंत्री और सरकार को ब्यान देकर कमजोर किया और फिर पलट गये। जयराम के इस ब्यान को लेकर वाकायदा प्रैस नोट जारी हुआ है। जयराम के इस ब्यान से प्रदेश के राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में नई अटकलों का दौर शुरू हो गया है। स्मरणीय है कि कांग्रेस के बागीयों ने अपने रोष को 27 फरवरी को राज्यसभा चुनाव में क्रॉस वोटिंग करके मूर्त रूप दे दिया और कांग्रेस यह चुनाव हार गयी। इस हार के बाद बागी सदन से निष्कासित भी हो गये और उनके क्षेत्रों में उपचुनाव की घोषित हो गया। यह लोग भाजपा में शामिल हो गये और पार्टी ने इन्हें उपचुनाव के लिये अपना उम्मीदवार भी नामित कर दिया। 27 फरवरी के बाद करीब एक माह तक यह लोग हिमाचल से बाहर रहे। इस बाहर रहने का सारा प्रबन्ध करने का आरोप भाजपा पर लगा है। धन बल से सरकार गिराने का आरोप भाजपा पर लग रहा है। कांग्रेस के दो विधायकों ने इस आश्य की शिकायत भी बालूगंज पुलिस थाना में करवा रखी है। जिसकी जांच चल रही है। प्रदेश के वर्तमान राजनीतिक अस्थिरता के दौर के लिये भाजपा को कोसा जा रहा है। कांग्रेस में मुख्यमंत्री से लेकर नीचे तक हर नेता आरोप लगा रहा है कि जयराम धन बल के सहारे मुख्यमंत्री बनने की जल्दबाजी में है। कांग्रेस के इन आरोपों का जयराम यह कहकर जवाब दे रहे हैं कि मुख्यमंत्री अपने विधायकों को संभाल कर नहीं रख पाये और दूसरों को दोष दे रहे हैं। इसी के साथ जयराम यह दावा करना भी नहीं भूल रहे हैं कि चुनाव के बाद सुक्खू सरकार गिर जायेगी। सरकार अल्पमत में आ गयी है यह कहना भी नहीं भूल रहे हैं। इस परिदृश्य में जयराम का प्रतिभा–विक्रमादित्य को लेकर आया ब्यान राजनीतिक पंडितों के लिये एक रोचक विषय बन गया है। क्योंकि इस समय सदन में कांग्रेस की संख्या 34 रह गयी है जबकि भाजपा की 25 ही है। यदि निर्दलीयों के क्षेत्र में भी उपचुनाव हो जाये और भाजपा सभी नौ स्थानों पर जीत जाये तो भाजपा की संख्या कांग्रेस के बराबर आती है और तब सदन में सरकार के अल्पमत में आने से गिरने की संभावना बनती है। ऐसे में जयराम का इस तरह का ब्यान इस समय आना अपने में महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रदेश में जो कुछ घटा है वह भाजपा प्रायोजित है इसमें किसी को संदेह नहीं है। यह भी स्पष्ट है कि प्रदेश सरकार को गिराना भाजपा की आवश्यकता बन गया है। इसके लिये कांग्रेस में और तोड़फोड़ करना पहला कदम होगा। आज केन्द्र विपक्ष की सरकारें गिराने के लिये केन्द्रीय एजैन्सियों के दुरुपयोग के आरोप झेल रहा है। लेकिन जयराम के ब्यान के बाद क्या कांग्रेस और नहीं संभल जायेगी। क्योंकि जयराम का ब्यान उस समय आया है जब विक्रमादित्य सिंह को मण्डी से कांग्रेस का उम्मीदवार बनाने के संकेत आ रहे हैं। विक्रमादित्य सिंह निश्चित रूप से भाजपा की कंगना रनौत से सौ प्रतिशत बेहतर प्रत्याशी है। फिर जब प्रतिभा सिंह जयराम की सरकार के समय मण्डी का उपचुनाव जीत गयी थी तो अब कांग्रेस की सरकार में विक्रमादित्य सिंह की जीत की संभावनाएं ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस क्षेत्र की हार जीत का सीधा प्रभाव जयराम के राजनीतिक भविष्य पर भी पड़ेगा यह स्पष्ट है। इस राजनीतिक परिदृश्य में जयराम के इस ब्यान को शीघ्रता में दिया गया ब्यान माना जा रहा है। क्योंकि इस ब्यान के साथ जयराम का सरकार के गिरने का दावा कमजोर पड़ जाता है। वर्तमान परिदृश्य में इस ब्यान को भ्रामकता पैदा करने का असफल प्रयास माना जा रहा है। क्योंकि प्रतिभा और विक्रमादित्य के सोनिया गांधी को मिलने के बाद यह माना जा रहा है कि प्रदेश पर कांग्रेस हाईकमान नजर रख रही है।

ग्रीन बैलट में सात मंजिला निर्माण सरकार की नीतियों पर सवाल

शिमला/शैल। प्रदेश में पिछले वर्ष आयी आपदा ने जिस तरह का जान माल का नुकसान पहुंचाया है उससे प्रदेश का हर आदमी एक स्थायी भय का शिकार हो गया है। सरकार को इस आपदा से प्रभावितों के लिये 4500 करोड़

का राहत पैकेज जारी करना पड़ा है। लेकिन क्या सरकार की नीतियों और योजनाओं पर इस आपदा का कोई प्रभाव पड़ा है। यह सवाल सुप्रीम कोर्ट कि पर्यावरण को लेकर गठित मॉनिटरिंग कमेटी के पूर्व अध्यक्ष सेवानिवृत्ति आईएफएस अधिकारी वी.पी.मोहन द्वारा उठाये गये कुछ मुद्दों के बाद उठा है। शिमला पर्यावरण की दृष्टि से सत्रह हरित खण्डों में विभाजित है और इन खण्डों में निर्माणों के लिये बड़े–बड़े नियम है। यहां पर बहुमंजिला निर्माण नहीं हो सकते। लेकिन शिमला की ग्रीन बैलट छः में एक साथ मंजिला भवन की तस्वीरें मीडिया को जारी करते हुये वी.पी.मोहन ने सवाल उछाला की ग्रीन बेल्ट में यह भवन किन नियमों के तहत बना है। यह भवन प्रदेश के मुख्यमंत्री का है और उन्होंने अपने चुनावी शपथ पत्र में दिखाया भी है। फिर मुख्यमंत्री तो स्वयं भी एक समय नगर निगम शिमला के पार्षद रह चुके हैं। इस भवन की तस्वीरें जारी करके वी. पी.मोहन ने यह प्रमाणित किया है कि नियमों कानूनों को किस स्तर पर अंगूठा दिखाया जा रहा है और ऐसे शिमला कैसे बच पायेगा?

वी.पी.मोहन ने शिमला की डेवलपमैन्ट प्लान को शिमला के विनाश की योजना बताया क्योंकि जिस दिन से यह योजना लागू हुई है उसी दिन से शिमला की हरित पट्टीयों में निर्माण कार्य शुरू हो गये हैं। जबकि एन.जी.टी. के 2017 के फैसले से हरित पट्टीयों में निर्माण पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। एन.जी.टी. के फैसले से लोगों को तकलीफ हो गयी क्योंकि यहां पर हर कोई बिल्डर है। नेता नौकरशाह सभी यहां पर अवैध निर्माण कर भवन बनाना चाहते हैं क्योंकि यह पर्यटन नगरी है। उन्होंने सवाल उठाया की सरकार ने आठ और हरित पट्टीयां बनाने की बात की है। लेकिन जब पहले ही सत्रह हरित पट्टीयों में निर्माणों की आहूति दे दी गयी है तब इन आठ नयी पट्टीयों से क्या लाभ होगा। शिमला को बचाने के लिये यहां के देवदारों को सुरक्षित रखना आवश्यक है। यह दावा किया जा रहा है । दो सौ सुखे देवदारों को कटवा दिया गया है लेकिन यह नहीं बताया गया कि यह पेड़ सुखे कैसे थे। वी.पी. मोहन ने शिमला डेवलपमेन्ट प्लान को निश्चित योजना के तहत तैयार करवाये जाने का आरोप लगाया ताकि नये निर्माणों का रास्ता खुल जाये। उन्होंने आरोप लगाया है कि यह विकास प्लान गुजरात की एक कन्सलटैन्ट कंपनी को करोड़ों की फीस देकर तैयार करवाया गया लेकिन प्लान तैयार करने वाले यह भूल गये की मैदान और पहाड़ में विकास के मानक अलग–अलग होते हैं। शिमला को लेकर उठायी गयी इन चिन्ताओं

पर न तो कांग्रेस और न ही भाजपा की ओर से कोई प्रतिक्रियायें आयी हैं। जबकि मुख्यमंत्री के अपने निर्माण की तस्वीरें जारी की गयी हैं। कांग्रेस और भाजपा दोनों की ही सरकारों में रिटैन्शन पॉलिसियां लायी गयी तथा अवैधताओं को जारी रखवाया गया। शायद इसी कड़वे सच के कारण दोनों प्रमुख दल खामोश हैं।